बाइबल आधारित धर्मविज्ञान का निर्माण करना

अध्याय 1

बाइबल आधारित धर्मविज्ञान क्या है?

Manuscript

thirdmill
Biblical Education. For the World. For Free.

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ 2021के द्वारा

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस प्रकाशन के किसी भी भाग को प्रकाशक, थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़, इनकोरपोरेशन, 316, लाइव ओक्स बुलेवार्ड, कैसलबरी, फ्लोरिडा 32707 की लिखित अनुमति के बिना समीक्षा, टिप्पणी, या अध्ययन के उद्देश्यों के लिए संक्षिप्त उद्धरणों के अतिरिक्त किसी भी रूप में या किसी भी तरह के लाभ के लिए पुनः प्रकशित नहीं किया जा सकता।

पवित्रशास्त्र के सभी उद्धरण बाइबल सोसाइटी ऑफ़ इंडिया की हिन्दी की पवित्र बाइबल से लिए गए हैं। सर्वाधिकार © The Bible Society of India

थर्ड मिलेनियम के विषय में

1997 में स्थापित, थर्ड मिलेनियम एक लाभनिरपेक्ष सुसमाचारिक मसीही सेवकाई है जो पूरे संसार के लिए मुफ्त में बाइबल आधारित शिक्षा प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध है।

संसार के लिए मुफ़्त में बाइबल आधारित शिक्षा।

हमारा लक्ष्य संसार भर के हज़ारों पासवानों और मसीही अगुवों को मुफ़्त में मसीही शिक्षा प्रदान करना है जिन्हें सेवकाई के लिए पर्याप्त प्रशिक्षण प्राप्त नहीं हुआ है। हम इस लक्ष्य को अंग्रेजी, अरबी, मनडारिन, रूसी, और स्पैनिश भाषाओं में अद्वितीय मल्टीमीडिया सेमिनारी पाठ्यक्रम की रचना करने और उन्हें विश्व भर में वितरित करने के द्वारा पूरा कर रहे हैं। हमारे पाठयक्रम का अनुवाद सहभागी सेवकाइयों के द्वारा दर्जन भर से अधिक अन्य भाषाओं में भी किया जा रहा है। पाठ्यक्रम में ग्राफिक वीडियोस, लिखित निर्देश, और इंटरनेट संसाधन पाए जाते हैं। इसकी रचना ऐसे की गई है कि इसका प्रयोग ऑनलाइन और सामुदायिक अध्ययन दोनों संदर्भों में स्कूलों, समूहों, और व्यक्तिगत रूपों में किया जा सकता है।

वर्षों के प्रयासों से हमने अच्छी विषय-वस्तु और गुणवत्ता से परिपूर्ण पुरस्कार-प्राप्त मल्टीमीडिया अध्ययनों की रचना करने की बहुत ही किफ़ायती विधि को विकसित किया है। हमारे लेखक और संपादक धर्मवैज्ञानिक रूप से प्रशिक्षित शिक्षक हैं, हमारे अनुवादक धर्मवैज्ञानिक रूप से दक्ष हैं और लक्ष्य-भाषाओं के मातृभाषी हैं, और हमारे अध्यायों में संसार भर के सैकड़ों सम्मानित सेमिनारी प्रोफ़ेसरों और पासवानों के गहन विचार शामिल हैं। इसके अतिरिक्त हमारे ग्राफिक डिजाइनर, चित्रकार, और प्रोडयूसर्स अत्याधुनिक उपकरणों और तकनीकों का प्रयोग करने के द्वारा उत्पादन के उच्चतम स्तरों का पालन करते हैं।

अपने वितरण के लक्ष्यों को पूरा करने के लिए थर्ड मिलेनियम ने कलीसियाओं, सेमिनारियों, बाइबल स्कूलों, मिशनरियों, मसीही प्रसारकों, सेटलाइट टेलीविजन प्रदाताओं, और अन्य संगठनों के साथ रणनीतिक सहभागिताएँ स्थापित की हैं। इन संबंधों के फलस्वरूप स्थानीय अगुवों, पासवानों, और सेमिनारी विद्यार्थियों तक अनेक विडियो अध्ययनों को पहुँचाया जा चुका है। हमारी वेबसाइट्स भी वितरण के माध्यम के रूप में कार्य करती हैं और हमारे अध्यायों के लिए अतिरिक्त सामग्रियों को भी प्रदान करती हैं, जिसमें ऐसे निर्देश भी शामिल हैं कि अपने शिक्षण समुदाय को कैसे आरंभ किया जाए।

थर्ड मिलेनियम a 501(c)(3) कारपोरेशन के रूप में IRS के द्वारा मान्यता प्राप्त है। हम आर्थिक रूप से कलीसियाओं, संस्थानों, व्यापारों और लोगों के उदार, टैक्स-डीडक्टीबल योगदानों पर आधारित हैं। हमारी सेवकाई के बारे में अधिक जानकारी के लिए, और यह जानने के लिए कि आप किस प्रकार इसमें सहभागी हो सकते हैं, कृपया हमारी वैबसाइट http://thirdmill.org को देखें।

विषय-वस्तु

परिचय....1

दिशा-निर्धारण....1

ऐतिहासिक विश्लेषण....2

परमेश्वर के कार्य....3

धर्मवैज्ञानिक चिंतन....4

तथ्यात्मक ऐतिहासिक विश्लेषण....5

धर्मवैज्ञानिक ऐतिहासिक विश्लेषण....5

घटनाओं का विकास....6

सांस्कृतिक परिवर्तन....6

धर्मवैज्ञानिक प्रत्युत्तर....7

आलोचनात्मक बाइबल आधारित धर्मविज्ञान....7

सुसमाचारिक घटनाक्रम....9

इतिहास और प्रकाशन....12

कार्य और वचन....13

कार्य प्रकाशन....13

वचन प्रकाशन....14

परस्पर संबंध....16

रूपरेखा....19

लक्ष्य....19

कार्य और वचन प्रकाशन का उठना और गिरना....21

संगठित विकासक्रम....22

उपसंहार....25

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

बाइबल आधारित धर्मविज्ञान का निर्माण करना

अध्याय एक

बाइबल आधारित धर्मविज्ञान क्या है?

परिचय

जब हम लोगों से पहली बार मिलते हैं तो हम पर अक्सर उनका "पहला प्रभाव" पड़ता है, वे ऐसे मत होते हैं जो हम दूसरों के विषय में तब रखते हैं जब हम उनको जान लेते हैं। परंतु जैसे जैसे संबंध बढ़ता जाता हैं, हम अपने मित्रों के बारे में और अधिक जानने लगते हैं जब हम उनसे उनके जीवनों, उनके व्यक्तिगत इतिहास के बारे में पूछते हैं। जब हम उन महत्वपूर्ण घटनाओं के बारे में जान जाते हैं, जिन्होंने उनके जीवनों को आकार दिया है, तो हम बहुत सी अंतर्दृष्टियों को प्राप्त करते हैं जो हमारे पहले प्रभावों से बढ़कर होती हैं।

अनेक रूपों में, कुछ ऐसा ही मसीही धर्मविज्ञान के साथ भी होता है। मसीह के अनुयायी होने के नाते, हम मुख्यतः नए नियम के अपने पहले प्रभावों से अक्सर अपनी धारणाओं को बनाना शुरू कर देते हैं। परंतु हम अपने विश्वास के इतिहास को सीखने के द्वारा इस विषय में अपनी जागरूकता को बढ़ा सकते हैं कि मसीही होने के नाते हमारा विश्वास क्या है, उत्पत्ति के आरंभिक पृष्ठों से लेकर प्रकाशितवाक्य के अंतिम अध्यायों तक यह कैसे विकसित हुआ।

यह बाइबल आधारित धर्मविज्ञान का निर्माण करना की हमारी श्रृंखला का पहला अध्याय है। इस अध्याय में हम बाइबल आधारित धर्मविज्ञान के नाम से प्रचलित शिक्षण-संकाय का अध्ययन करेंगे, यह धर्मविज्ञान की ऐसी शाखा है, जो यह अध्ययन करती है कि बाइबल के संपूर्ण इतिहास के दौरान हमारा विश्वास कैसे विकसित हुआ। हमने इस अध्याय का नाम दिया है, "बाइबल आधारित धर्मविज्ञान क्या है?" और इस परिचयात्मक अध्याय में, हम कई ऐसे मूलभूत विषयों की खोज करेंगे जो इस पूरी श्रृंखला में हमारा मार्गदर्शन करेंगे।

हमारा अध्याय तीन मुख्य विषयों पर केंद्रित होगा : पहला, हम बाइबल आधारित धर्मविज्ञान के विषय में मूलभूत दिशा-निर्धारण को प्राप्त करेंगे। इस शब्दावली से हमारा क्या अर्थ है? दूसरा, हम बाइबल आधारित धर्मविज्ञान के विकास को देखेंगे। सदियों से इस शिक्षण-संकाय ने किस दिशा को लिया है? और तीसरा, हम इतिहास और प्रकाशन के बीच के संबंधों की खोज करेंगे, जो कि बाइबल आधारित धर्मविज्ञान का एक बहुत ही महत्वपूर्ण विषय है। आइए अपने विषय के मूलभूत दिशा-निर्धारण से आरंभ करें।

दिशा-निर्धारण

धर्मविज्ञानियों ने "बाइबल आधारित धर्मविज्ञान" शब्द-समूह का प्रयोग विभिन्न तरीकों से किया है। इन प्रयोगों को व्यापक और संकीर्ण भावों की कड़ी के रूप में सोचना समझने में सहायक बनता है। व्यापक भावों में, इस शब्द-समूह का अर्थ ऐसा धर्मविज्ञान है जो बाइबल की विषय-वस्तु के अनुरूप हो। इस दृष्टिकोण से, बाइबल आधारित धर्मविज्ञान वह धर्मविज्ञान है जो पवित्रशास्त्र की शिक्षाओं को सटीकता से दर्शाता है।

यह कहने की आवश्यकता नहीं है कि सुसमाचारिक लोगों के लिए यह बहुत ही महत्वपूर्ण है कि व्यापक अर्थ में संपूर्ण धर्मविज्ञान बाइबल आधारित होना चाहिए। हम बाइबल की विषय-वस्तु के साथ

सच्चे होना चाहते हैं क्योंकि हम सोला-स्क्रिपचरा अर्थात् केवल पवित्रशास्त्र की धर्मशिक्षा के प्रति समर्पित हैं, जिसका अर्थ है कि पवित्रशास्त्र सभी धर्मवैज्ञानिक प्रश्नों के लिए सर्वोच्च और अंतिम न्यायी है।

परंतु समकालीन धर्मविज्ञानी बाइबल आधारित धर्मविज्ञान के बहुत ही संकीर्ण, तथा अधिक तकनीकी रूप के बारे में भी बात करते हैं। कड़ी के इस सिरे पर, बाइबल आधारित धर्मविज्ञान ऐसा धर्मविज्ञान है जो न केवल बाइबल की विषय-वस्तु के, बल्कि पवित्रशास्त्र की प्राथमिकताओं के भी सदृश्य है। इस दृष्टिकोण से, बाइबल आधारित धर्मविज्ञान न केवल उससे जुड़ा रहता है जो बाइबल सिखाती है बल्कि इसके भी कि बाइबलकैसे अपने धर्मविज्ञान को व्यवस्थित या संगठित करती है। यह इसी संकीर्ण भाव में ही होता है कि बाइबल आधारित धर्मविज्ञान एक औपचारिक शिक्षण-संकाय बन गया है। और इस अध्याय में हमारे ध्यान का केंद्र यही रहेगा।

अब आप कल्पना कर सकते हैं कि जब पूरे संसार के मसीही पवित्रशास्त्र की खोज कर रहे हैं, तो उन्होंने इस विषय पर कई विभिन्न दृष्टिकोणों को लिया है कि बाइबल अपने धर्मविज्ञान को कैसे संगठित करती है। इसलिए, हमें इससे चकित नहीं होना चाहिए कि समकालीन धर्मविज्ञानियों ने बाइबल आधारित धर्मविज्ञान में विभिन्न दृष्टिकोणों को ले लिया है। समय हमें अनुमति नहीं देगा कि हम इन सभी विभिन्न दृष्टिकोणों की खोज करें। इसलिए हम बाइबल आधारित धर्मविज्ञान के केवल एक बहुत ही लोकप्रिय और प्रभावशाली दृष्टिकोण पर ध्यान केंद्रित करेंगे।

हमारे अध्यायों के उद्देश्यों के लिए, हम बाइबल आधारित धर्मविज्ञान के इस महत्वपूर्ण रूप की परिभाषा इस प्रकार दे सकते हैं : "बाइबल आधारित धर्मविज्ञान पवित्रशास्त्र में उल्लिखित परमेश्वर के कार्यों के ऐतिहासिक विश्लेषण से लिया गया धर्मवैज्ञानिक चिंतन है।" इस परिभाषा में कम से कम तीन तत्व सम्मिलित हैं : पहला, बाइबल आधारित धर्मविज्ञान पवित्रशास्त्र के विषय में एक व्याख्यात्मक रणनीति पर आधारित है, जिसे हम "ऐतिहासिक विश्लेषण" कहेंगे। दूसरा, यह ऐतिहासिक विश्लेषण विशेष रूप से बाइबल में पाए जाने वाले "परमेश्वर के कार्यों" से संबंधित है। और तीसरा, बाइबल आधारित धर्मविज्ञान में पवित्रशास्त्र के ईश्वरीय कार्यों पर "धर्मवैज्ञानिक चिंतन" सम्मिलित होता है।

पवित्रशास्त्र के प्रति इस दृष्टिकोण की बेहतर समझ प्राप्त करने के लिए हम अपनी परिभाषा के इन तीन पहलुओं को देखेंगे। पहला, हम इस बात की खोज करेंगे कि "ऐतिहासिक विश्लेषण" से हमारा क्या अर्थ है। दूसरा, हम इस बात को देखेंगे कि "परमेश्वर के कार्यों" से हमारा क्या अर्थ है। और तीसरा, हम ऐसे "धर्मवैज्ञानिक चिंतनों" की खोज करेंगे जो बाइबल आधारित धर्मविज्ञान में किए जाते होते हैं। आइए पहले इस तथ्य पर ध्यान दें कि बाइबल आधारित धर्मविज्ञान पवित्रशास्त्र के ऐतिहासिक विश्लेषण से चित्रित किया गया है।

ऐतिहासिक विश्लेषण

यह समझने के लिए कि ऐतिहासिक विश्लेषण से हमारा क्या अर्थ है, हमें कुछ ऐसे व्यापक दृष्टिकोणों की समीक्षा करने की आवश्यकता है जिनका परिचय हमने अन्य श्रृंखलाओं में दिया है। विधिवत धर्मविज्ञान का निर्माण करना की हमारी श्रृंखला में हमने देखा है कि पवित्र आत्मा ने पवित्रशास्त्र की व्याख्या करने के लिए कलीसिया की अगुवाई तीन मुख्य तरीकों से की है : साहित्यिक विश्लेषण, ऐतिहासिक विश्लेषण और विषयात्मक विश्लेषण। जैसा कि हमने कई बार कहा है, मसीही सदैव इन तीनों दृष्टिकोणों का एक दूसरे के साथ संयोजित करके प्रयोग करते हैं, परंतु हमारे विचार-विमर्श के लिए उनका अलग-अलग अध्ययन करना सहायक होगा।

साहित्यिक विश्लेषण पवित्रशास्त्र को एक चित्र के रूप में देखता है, अर्थात् एक ऐसी साहित्यिक तस्वीर जिसकी रचना मानवीय लेखकों के द्वारा विशेष रूपों में पाठकों को प्रभावित करने के लिए की गई हो। ऐतिहासिक विश्लेषण पवित्रशास्त्र को इतिहास की एक खिड़की के रूप में देखता है, और बाइबल

की पृष्ठभूमि में छिपी ऐतिहासिक घटनाओं की खोज करता है। और विषयात्मक विश्लेषण पवित्रशास्त्र को एक ऐसे दर्पण के रूप में देखता है, जो हमारी रूचियों और प्रश्नों को प्रतिबिंबित करता है।

विधिवत धर्मविज्ञान एक औपचारिक शिक्षण-संकाय है जो मौलिक रूप से विषयात्मक विश्लेषण पर बल देता है। विधिवत धर्मविज्ञानी पारंपरिक मसीही विश्वास के ऐसे विषयों और प्राथमिकताओं पर बल देते हैं जो कलीसिया के पूरे इतिहास के दौरान विकसित हुई हैं। वे बहुत ही पारंपरिक प्रश्नों या विषयों की एक लंबी सूची के उत्तरों के लिए विशेष रूप से पवित्रशास्त्र की ओर मुड़ते हैं।

इसके विपरीत, बाइबल आधारित धर्मविज्ञान मुख्यतः ऐतिहासिक विश्लेषण के साथ पवित्रशास्त्र की ओर मुड़ता है। यह बाइबल को एक ऐसी खिड़की के रूप में देखता है जो इतिहास तक पहुँचने में सहायता करती है। जैसा कि हम इस श्रृंखला में देखेंगे, जब व्याख्या का ध्यान पारंपरिक धर्मविज्ञान आधारित विषयों की ओर से हट कर बाइबल में पाई जाने वाली ऐतिहासिक घटनाओं की ओर मुड़ता है, तो एक बिल्कुल अलग तरह की प्राथमिकताएँ और विषय उभर कर सामने आते हैं। यद्यपि शुद्ध बाइबल आधारित धर्मविज्ञान शुद्ध विधिवत धर्मविज्ञान का विरोध नहीं करता, परंतु फिर भी यह महत्वपूर्ण रूप से भिन्न धर्मवैज्ञानिक दृष्टिकोणों की ओर अगुवाई करता है।

यह देख लेने के बाद कि बाइबल आधारित धर्मविज्ञान पवित्रशास्त्र के ऐतिहासिक विश्लेषण पर आधारित है, हमें अब इस तथ्य की ओर मुड़ना चाहिए कि यह प्राथमिक रूप से परमेश्वर के कार्यों से संबंधित है। बाइबल बहुत सी भिन्न-भिन्न ऐतिहासिक घटनाओं को दर्शाती है, परंतु बाइबल आधारित धर्मविज्ञान मुख्य रूप से यह पूछता है, “परमेश्वर ने जो किया है उसके विषय में पवित्रशास्त्र क्या कहता है?” क्योंकि मसीही इस प्रश्न का उत्तर विभिन्न रूपों में देते हैं, इसलिए हमें यहाँ इस बात पर मनन करने के लिए एक पल रुकना चाहिए कि बाइबल इतिहास में परमेश्वर के कार्यों के बारे में क्या सिखाती है।

परमेश्वर के कार्य

इतिहास में परमेश्वर के कार्य पर बोलने के लिए एक पारंपरिक और सहायक तरीका विश्वास के वेस्टमिंस्टर अंगीकरण के अध्याय 5, के अनुच्छेद 3 में पाया जाता है। इस संसार में परमेश्वर के कार्य के विषय में इसका विवरण हमें कुछ महत्वपूर्ण दृष्टिकोणों का एक सुविधाजनक सार प्रदान करता है। सुनिए किस प्रकार से परमेश्वर के विधान का वर्णन यहाँ किया गया है।

> परमेश्वर अपने सामान्य विधान में सभी माध्यमों का प्रयोग करता है, परंतु फिर भी वह इनके बिना, इनसे बढ़कर और इनके विरूद्ध अपनी इच्छा के अनुसार कार्य करने के लिए स्वतंत्र है।

यहाँ ध्यान दें कि विश्वास का अंगीकरण ईश्वरीय विधान की चार मुख्य श्रेणियों को सूचीबद्ध करता है, परमेश्वर का इतिहास में भागीदार होना, या जिसे हम परमेश्वर के कार्य कह सकते हैं। यह उन रूपों में इन चार श्रेणियों को दर्शाता है जिनमें परमेश्वर स्वयं को ऐसे “माध्यमों” के साथ सहभागी करता है जो सृजे गए माध्यम या कारक हैं।

कड़ी के एक छोर पर अंगीकरण यह उल्लेख करता है कि परमेश्वर सामान्य रूप में माध्यमों का प्रयोग करता है, अर्थात् वह माध्यमों के द्वारा कार्य करता है। दूसरे शब्दों में, परमेश्वर सृष्टि के विभिन्न भागों के माध्यम से कार्य करने के द्वारा अपने उद्देश्यों को इतिहास में पूरा करता है। इस श्रेणी में ऐसी बातें प्राकृतिक घटनाएँ और रोजमर्रा के सृष्टि-संबंधी कार्य जैसी बातें शामिल होती हैं।

दूसरा, अंगीकरण बिना माध्यमों से परमेश्वर द्वारा कार्य करने, अर्थात् इस संसार में सामान्य माध्यमों का बिलकुल प्रयोग किए बिना सीधे ही हस्तक्षेप करने के विषय में बात करता है। उदाहरण के

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

तौर पर, पवित्रशास्त्र में कई बार परमेश्वर लोगों पर रोग लाता है और उन्हें बिना किसी सृजित माध्यमों के द्वारा चंगा कर देता है।

तीसरा, अंगीकरण इतिहास में माध्यमों से बढ़कर परमेश्वर द्वारा कार्य करने के बारे में बात करता है, अर्थात् अपेक्षाकृत एक साधारण बात को लेकर उसे बहुत बड़ा बना देना। उदाहरण के लिए, सारा के अब्राहम के साथ मिलन के द्वारा इसहाक का अलौकिक रूप से जन्म, परंतु यह बुढ़ापे की अवस्था में हुआ, जब वह बच्चा जनने की सामान्य उम्र से बहुत आगे निकल चुकी थी।

और चौथा, अंगीकरण माध्यमों के विरूद्ध परमेश्वर द्वारा कार्य करने के बारे में बात करता है, अर्थात् कार्यों को ऐसे घटित करवाना जो सृष्टि के सामान्य संचालनों के विपरीत हो। उदाहरण के लिए, यहोशू के दिनों में परमेश्वर ने तब प्रकृति की सामान्य पद्धतियों के विरूद्ध कार्य किया, जब उसने सूर्य को एक स्थान पर खड़ा कर दिया था।

परमेश्वर के विधान की ये चार श्रेणियाँ यह स्पष्ट करने में हमारी सहायता करती हैं कि परमेश्वर के कार्यों से हमारा क्या अर्थ है। ऐसे समय भी होते हैं जब परमेश्वर माध्यमों के द्वारा कार्य करता है। ऐसी घटनाओं के प्रकट होने में अक्सर परमेश्वर की सहभागिता न के बराबर होती है, यद्यपि वह परदे के पीछे सदैव उन्हें नियंत्रित करता रहता है। परंतु परमेश्वर के अन्य कार्य और भी अधिक नाटकीय होते हैं। जब परमेश्वर सृजी हुई शक्तियों के बिना, उनसे बढ़कर और उनके विरूद्ध कार्य करता है, तो हम सामान्यतः इन घटनाओं को “ईश्वरीय हस्तक्षेप” या “आश्चर्यकर्म” कहते हैं।

बाइबल के धर्मविज्ञानी जब पवित्रशास्त्र में पाए जाने वाले परमेश्वर के कार्यों पर ध्यान केंद्रित करते हैं, तो वे ईश्वरीय कार्य के संपूर्ण क्षेत्र पर ध्यान तो देते हैं, परंतु समान रूप से नहीं। यद्यपि यह सत्य है कि वे कभी-कभी ऐसी सामान्य घटनाओं पर मनन करते हैं, जहाँ परमेश्वर ने माध्यमों के द्वारा कार्य किया था, फिर भी वे मुख्य रूप से परमेश्वर के असाधारण कार्यों पर ध्यान केंद्रित करते हैं, अर्थात् ऐसे समयों पर जब परमेश्वर सामान्य माध्यमों के बिना, उनसे बढ़कर और उनके विरूद्ध कार्य करता है। और परमेश्वर का कार्य जितना अधिक प्रभावशाली होता है, उतना ही अधिक बाइबल के धर्मविज्ञानी इस पर बल देने की प्रवृत्ति रखते हैं।

सृष्टि की रचना, मिस्र में से निर्गमन, कनान पर विजय, मसीह का जन्म, जीवन, मृत्यु, पुनरूत्थान और स्वर्गारोहण जैसी घटनाएँ पवित्रशास्त्र के पृष्ठों पर ऐसे समयों के रूप में मुख्य रूप से दिखाई देती हैं, जब परमेश्वर ने इतिहास में नाटकीय तरीके से हस्तक्षेप किया था। अतः जब हम कहते हैं कि बाइबल आधारित धर्मविज्ञान परमेश्वर के कार्यों की ओर ध्यान को आकर्षित करता है, तो परमेश्वर के इस तरह के असाधारण कार्य प्राथमिक विषय बन जाते हैं।

अब क्योंकि हमने यह देख लिया है कि बाइबल आधारित धर्मविज्ञान बाइबल पर ऐतिहासिक विश्लेषण के माध्यम से दृष्टि डालता है और पवित्रशास्त्र में उल्लिखित परमेश्वर के असाधारण कार्यों पर ध्यान केंद्रित करता है, इसलिए हमें अपनी परिभाषा के तीसरे आयाम की ओर मुड़ना चाहिए : यह तथ्य कि बाइबल आधारित धर्मविज्ञान में इन विषयों पर धर्मवैज्ञानिक चिंतन सम्मिलित होते हैं।

धर्मवैज्ञानिक चिंतन

बाइबल आधारित धर्मविज्ञान में धर्मवैज्ञानिक चिंतन पवित्रशास्त्र में पाए जाने वाले परमेश्वर के कार्यों के ऐतिहासिक विश्लेषण पर आधारित होता है, परंतु ऐतिहासिक विश्लेषण विभिन्न रूप ले सकता है। यह कम से कम दो मुख्य प्रवृत्तियों के बारे में सोचने में सहायता करता है : तथ्यात्मक ऐतिहासिक विश्लेषण और धर्मवैज्ञानिक ऐतिहासिक विश्लेषण। ये दो प्रवृत्तियाँ साथ साथ चलती हैं, परंतु उनके मुख्य विषय काफी भिन्न हैं। आइए पहले इस पर विचार करें कि तथ्यात्मक ऐतिहासिक विश्लेषण से हमारा क्या अर्थ है।

तथ्यात्मक ऐतिहासिक विश्लेषण

अक्सर बाइबल के आधुनिक पाठक बाइबल के इतिहास के प्रति "तथ्यात्मक" दृष्टिकोण को लेते हैं। कहने का अर्थ यह है कि वे इस बात की ओर ध्यान देते हैं कि पवित्रशास्त्र में पाई जाने वाली घटनाएँ प्राचीन मध्य पूर्व के व्यापक वातावरण में कैसे उपयुक्त बैठती हैं। ऐतिहासिक विश्लेषण के प्रति तथ्यात्मक दृष्टिकोण का ध्यान मूसा की अधीनता में निर्गमन के समय, इस्राएल के राजतंत्र का उदय करने वाली ऐतिहासिक परिस्थितियों, कुछ विशेष युद्धों के प्रमाणों और अन्य महत्वपूर्ण घटनाओं जैसे प्रश्नों पर रहता है। इसके विपरीत तथ्यात्मक ऐतिहासिक विश्लेषण का लक्ष्य बिलकुल सीधा है। यह हमारे द्वारा पवित्रशास्त्र से सीखी गई बातों और बाइबल से बाहर के स्रोतों से एकत्र की गई जानकारी को जोड़ने के द्वारा इतिहास के तथ्यों के विश्वसनीय विवरण की स्थापना करना है।

धर्मवैज्ञानिक ऐतिहासिक विश्लेषण

तथ्यात्मक विषय चाहे जितने भी महत्वपूर्ण हों, बाइबल आधारित धर्मविज्ञान धर्मवैज्ञानिक ऐतिहासिक विश्लेषण को अधिक महत्व देता है। बाइबल के धर्मविज्ञानी पवित्रशास्त्र में उल्लिखित परमेश्वर के कार्यों के धर्मवैज्ञानिक महत्व में अधिक रूचि रखते हैं। हमारे कहने के अर्थ को समझने के लिए हमें थॉमस अक्विनॉस के लेखनों में पाई जाने वाली धर्मविज्ञान की मूल परिभाषा की ओर मुड़ना चाहिए जो यह दर्शाती है कि अधिकांश मसीहियों का तब क्या अभिप्राय होता है जब वे धर्मवैज्ञानिक चिंतन के बारे में बात करते हैं।

अपनी सुपरिचित पुस्तक सुम्मा थियोलोजिका की पुस्तक 1, के अध्याय 1, के भाग 7 में, अक्विनॉस ने धर्मविज्ञान को "पवित्र धर्मशिक्षा" कहा है, और इसे इस प्रकार परिभाषित किया है :

> एक ऐसा एकीकृत विज्ञान जिसमें सभी बातों को इसलिए परमेश्वर के पहलू के अधीन देखा जाता है क्योंकि या तो वे स्वयं परमेश्वर की हैं या फिर परमेश्वर की ओर संकेत करती हैं।

सामान्यतः मसीही इसमें अक्विनॉस के साथ सहमत होते हैं कि धर्मविज्ञान के दो मुख्य विषय हैं। एक ओर, वह कुछ भी धर्मवैज्ञानिक विषय हो सकता है जो सीधे-सीधे परमेश्वर की ओर संकेत करता है। और दूसरी ओर, वह कुछ भी धर्मवैज्ञानिक विषय हो सकता है जो अन्य विषयों का वर्णन परमेश्वर के संबंध में करता है। पहली श्रेणी वह है जिसे पारंपरिक धर्मविज्ञान परमेश्वर-विज्ञान कहता है। और बाद वाली श्रेणी में ऐसे विषय सम्मिलित होते हैं, जैसे मनुष्यत्व, पाप, उद्धार, नैतिकता, कलीसिया इत्यादि की धर्मशिक्षाएँ।

यह द्विभागी परिभाषा हमें उन तरीकों के बारे में बताती है जिनमें बाइबल आधारित धर्मविज्ञान धर्मवैज्ञानिक चिंतनों को सम्मिलित करता है। एक ओर, बाइबल के धर्मविज्ञानी यह देखने के लिए परमेश्वर के कार्यों के विषय में बाइबल की खोज करते हैं कि वे स्वयं परमेश्वर के बारे में हमें क्या सिखाते हैं। परमेश्वर के सामर्थी कार्य परमेश्वर के चरित्र और परमेश्वर की इच्छा के बारे में क्या प्रकट करते हैं? और दूसरी ओर, बाइबल आधारित धर्मविज्ञान परमेश्वर के संबंध में अन्य विषयों पर भी ध्यान लगाता है : जैसे मनुष्यजाति, पाप, उद्धार और अन्य कई शीर्षक। बाइबल आधारित धर्मविज्ञान इन सभी धर्मवैज्ञानिक विषयों के प्रति हमारी समझ को बढ़ाने और विकसित करने के मार्ग को खोल देते हैं।

इस मूलभूत दिशा-निर्देश को ध्यान में रखते हुए, आइए हम अपने दूसरे मुख्य शीर्षक की ओर मुड़ें : घटनाओं के ऐसे विकास जिन्होंने बाइबल आधारित धर्मविज्ञान के औपचारिक शिक्षण की ओर अगुवाई की। यह किस प्रकार हुआ? मसीहियों ने इस प्रकार से पवित्रशास्त्र को क्यों देखा?

घटनाओं का विकास

हम इन प्रश्नों के दो आयामों को देखेंगे : पहला, हम कुछ ऐसे मुख्य सांस्कृतिक परिवर्तनों की खोज करेंगे जिन्होंने बाइबल आधारित धर्मविज्ञान के मंच को तैयार किया। और दूसरा, हम इन सांस्कृतिक परिवर्तनों के प्रति कलीसिया के धर्मवैज्ञानिक प्रत्युत्तरों को देखेंगे। आइए पहले संस्कृति के उन परिवर्तनों को देखें जो बाइबल आधारित धर्मविज्ञान के उदय के साथ घटित हुए।

सांस्कृतिक परिवर्तन

हमें यह सदैव याद रखना चाहिए कि मसीही धर्मविज्ञानियों ने ऐसे रूपों में मसीही धर्मविज्ञान की पुनः रचना करने के द्वारा जो अपनी समकालीन संस्कृतियों के साथ प्रासंगिक हों, उचित रूप से महान आदेश को पूरा करने का प्रयास किया है। अन्य अध्यायों में हमने यह देखा है कि विधिवत धर्मविज्ञान तब प्राचीन और मध्यकालीन कलीसिया द्वारा भूमध्यसागरीय क्षेत्रों में मसीह के सत्य को प्रकट करने के प्रयासों से विकसित हुआ जब उन पर नव-प्लूटोवाद और अरस्तुवाद का प्रभाव था। जब मसीहियों ने इन दर्शनशास्त्रों की चुनौतियों का सामना किया, तो उन्होंने पवित्रशास्त्र के प्रति विश्वासयोग्य रहने का प्रयास किया, परंतु साथ ही ऐसे विषयों का सामना करने का भी प्रयास किया जो इन दार्शनिक दृष्टिकोणों के कारण प्रमुखता के साथ उठ खड़े हुए थे।

लगभग इसी तरह से, बाइबल आधारित धर्मविज्ञान वृहद् रूप में ऐसे सांस्कृतिक परिवर्तनों के प्रति एक प्रत्युत्तर है, जिन्हें 17वीं सदी के पुनर्जागरण में खोजा जा सकता है। इसका अर्थ यह नहीं है कि बाइबल आधारित धर्मविज्ञान के विषय पूरी तरह से नए थे, या वे केवल आधुनिक समय से संबंध रखते हैं। मसीहियों ने सदैव पवित्रशास्त्र में पाए जाने वाले परमेश्वर के कार्यों की खोज की है। परंतु आधुनिक समय में, ऐसे विशेष सांस्कृतिक परिवर्तन हुए हैं, जिन्होंने धर्मविज्ञानियों की अगुवाई इन ऐतिहासिक रूचियों पर पहले से अधिक बल देने में की है।

सरल रूप में कहें तो, बाइबल आधारित धर्मविज्ञान आधुनिक समय में एक महत्वपूर्ण बौद्धिक आंदोलन के प्रति एक मसीही प्रत्युत्तर है, जिसे अक्सर आधुनिक इतिहासवाद कहा जाता है। बहुत ही सरल शब्दों में, आधुनिक इतिहासवाद की ऐसी मान्यता है कि इतिहास के पास स्वयं को और हमारे चारों ओर के संसार को समझने की कुँजी है। इस दृष्टिकोण में, किसी भी बात की पर्याप्त समझ को केवल तभी प्राप्त किया जा सकता है जब इतिहास में उसके स्थान पर ध्यान दिया जाता है।

पुनर्जागरण के समय का एक सबसे अधिक जाना-पहचाना व्यक्ति जिसने इस सांस्कृतिक परिवर्तन को व्यक्त किया, वह था जर्मन दार्शनिक जॉर्ज विल्हेम फ्रेड्रिक हेगेल, जिसका जीवनकाल 1770 से 1831 ईस्वी के बीच रहा। हेगेल को उसके इस प्रस्ताव के लिए याद किया जाता है कि वास्तविकता का प्रत्येक पहलू ऐतिहासिक विकास की तार्किक पद्धतियों में पाया जाता है जिसे द्वंद्वात्मक पद्धति के रूप में जाना जाता है। उसके विचार में पूरे ब्रह्मांड को परमेश्वर द्वारा ऐसे व्यवस्थित किया गया था कि इसने ईश्वर द्वारा स्थापित ऐतिहासिक तर्क का अनुसरण किया। उसके दृष्टिकोण से, हम संसार की प्रत्येक वस्तु को तब सर्वोत्तम रीति से समझते हैं जब हम इसे इतिहास की इस तार्किक पद्धति के प्रकाश में देखते हैं।

इतिहासवाद का यह और ऐसे अन्य रूप कई कारणों से आधुनिक काल में लोकप्रिय हुए। उदाहरण के लिए, पुरातात्विक खोजों की भरमार ने संसार की प्राचीन संस्कृतियों पर काफी प्रकाश डाला। भूविज्ञान पृथ्वी की आयु और विकास को समझने का एक प्रयास बन गया है, केवल यह समझने के लिए नहीं कि यह वर्तमान समय में कैसी है। यहाँ तक कि जीवविज्ञान अपने केंद्र में ऐतिहासिक बन गया है जब बहुत से जीवविज्ञानियों ने अपने अध्ययन को डार्विन के विकासवाद के संदर्भ में देखना आरंभ किया, यह विश्वास करते हुए कि हमारे ग्रह पर जीवन का आरंभ इसी तरह से हुआ था। आधुनिक इतिहासवाद के

प्रति ऐसे परिवर्तन धर्मविज्ञान सहित लगभग प्रत्येक शैक्षणिक अध्ययन प्रणाली में हुए। जीवन की प्रत्येक बात के विषय में यह सोचा गया कि उसे तभी सबसे व्यापक रूप में समझा जा सकता है जब इसका मूल्यांकन इतिहास के बहाव के संदर्भ में किया जाए।

आधुनिक इतिहासवाद पर दिए बल को मन में रखते हुए, हमें अपने ध्यान को उन तरीकों की ओर लगाना चाहिए जिनके द्वारा मसीही धर्मविज्ञानियों ने इस सांस्कृतिक परिवर्तन के प्रति प्रत्युत्तर दिया है। उन तरीकों पर इतिहासवाद का क्या प्रभाव पड़ा जिनमें मसीहियों ने धर्मविज्ञान का अध्ययन किया, विशेषकर उन तरीकों पर जिनमें उन्होंने बाइबल की व्याख्या की?

धर्मवैज्ञानिक प्रत्युत्तर

इतिहासवाद के आधुनिक मसीही धर्मविज्ञान पर असँख्य प्रभाव रहे हैं, परंतु इस अध्याय में हमारी रूचि विशेष रूप से इस बात में है कि इसने बाइबल आधारित धर्मविज्ञान को कैसे जन्म दिया। स्पष्ट है कि बाइबल आधारित धर्मविज्ञान इतिहास में आधुनिक पाश्चात्य संस्कृति की रूचि को दर्शाता है। परंतु जैसा कि हम देखेंगे, कुछ धर्मविज्ञानियों ने इतिहासवाद को ऐसे रूपों में ग्रहण किया है जिन्होंने मूलभूत मसीही धारणाओं के साथ समझौता किया है, जबकि अन्यों ने इतिहासवाद से बहुमूल्य अंतर्दृष्टियों को इन रूपों में समाविष्ट किया है जिन्होंने मसीह विश्वास के बारे में हमारी समझ को कायम रखा है और यहाँ तक कि इसमें वृद्धि की है।

इसी कारणवश, हम उन दो मुख्य दिशाओं को खोजेंगे जिन्हें बाइबल आधारित धर्मविज्ञान के शिक्षण में लिया गया है। पहली, हम उसकी जाँच करेंगे जिसे हम "आलोचनात्मक बाइबल आधारित धर्मविज्ञान" कहते हैं, ये इस शिक्षण के ऐसे रूप हैं जिन्होंने बाइबल के अधिकार को ठुकराने की हद तक आधुनिकता की आत्मा का अनुसरण किया है। और दूसरी, हम "सुसमाचारिक बाइबल आधारित धर्मविज्ञान" की खोज करेंगे, ये ऐसे तरीके हैं जिनमें इस शिक्षण का अनुसरण उन धर्मविज्ञानियों के द्वारा किया गया है जो बाइबल के अधिकार के प्रति सच्चे रहे हैं। आइए पहले आलोचनात्मक दायरों में बाइबल आधारित धर्मविज्ञान के विकासक्रमों को देखें।

आलोचनात्मक बाइबल आधारित धर्मविज्ञान

आधुनिक इतिहासवाद ने कई आलोचनात्मक धर्मविज्ञानियों को प्रेरित किया कि वे नए प्रश्नों और प्राथमिकताओं के साथ पवित्रशास्त्र को देखें। हम विकासक्रम के दो ऐतिहासिक चरणों पर संक्षेप में ध्यान के द्वारा विषय के केंद्र को समझ सकते हैं। पहला, हम 18वीं सदी में आरंभिक चरणों को देखेंगे। और दूसरा, हम और अधिक हाल ही के इतिहास में बाद के कुछ विकासक्रमों का वर्णन करेंगे। आइए पहले हम आरंभिक आलोचनात्मक बाइबल आधारित धर्मविज्ञान को देखें।

आधुनिक बाइबल आधारित धर्मविज्ञान के उद्गमों को 1787 ईस्वी में आल्टडोर्फ विश्वविद्यालय के जोहान गैबलर के आरंभिक संबोधन में खोजना सामान्य बात है। यद्यपि गैबलर से पहले भी महत्वपूर्ण विद्वान थे, परंतु उसने उस भिन्नता के बारे में बात की जिसने सदियों तक मसीही धर्मविज्ञान का मार्गदर्शन किया है।

गैबलर ने दो मूलभूत धर्मवैज्ञानिक क्रियाओं के बीच भिन्नता को दर्शाया। एक ओर, उसने "बाइबल आधारित धर्मविज्ञान" के बारे में बात की और इसे ऐसे ऐतिहासिक शिक्षण-संकाय के रूप में परिभाषित किया जो अपने प्राचीन ऐतिहासिक संदर्भ में बाइबल की शिक्षाओं का वर्णन करता है। इस दृष्टिकोण में, बाइबल आधारित धर्मविज्ञान का लक्ष्य इस बात की खोज करना था कि बाइबल के प्राचीन लेखकों और पात्रों की परमेश्वर और इस संसार के विषय में जिसमें वे रहते थे, क्या धारणा थी।

दूसरी ओर, गैबलर ने धर्म-सैद्धांतिक या विधिवत धर्मविज्ञान के बारे में बात की। विधिवत धर्मविज्ञान का लक्ष्य बाइबल की जाँच या व्याख्या करना नहीं था, बल्कि यह निर्धारित करना था कि मसीहियों को आधुनिक संसार में विज्ञान और धर्म पर तार्किक चिंतन के द्वारा किस बात पर विश्वास करना चाहिए।

अब यह महसूस करना महत्वपूर्ण है कि एक आलोचनात्मक धर्मविज्ञानी के रूप में गैबलर ने माना कि बाइबल आधारित धर्मविज्ञान के निष्कर्ष समय दर समय कुछ रूचिपूर्ण हो सकते हैं, परंतु आधुनिक मसीहियों को बाइबल के केवल उन्हीं भागों पर विश्वास करना चाहिए जो आधुनिक तार्किक और वैज्ञानिक विश्लेषण के मापदंडों पर खरे उतरते हैं। उसके विचार में, पवित्रशास्त्र उन लोगों की अपरिपक्व प्रथाओं और मान्यताओं को दर्शाता है जो आधुनिक तार्किक समय से पहले रहते थे। और इसी कारणवश, विधिवत धर्मविज्ञान अपेक्षाकृत स्वतंत्र शिक्षण-संकाय होना चाहिए, इस बात से लगभग बेपरवाह कि बाइबल आधारित धर्मविज्ञान बाइबल में क्या खोजता है।

बाइबल आधारित और विधिवत धर्मविज्ञान के बीच गैबलर के अंतर ने आलोचनात्मक धर्मविज्ञानियों के लिए दिशा-निर्देशों को स्थापित कर दिया जो आज भी हमारे दिनों तक चले आ रहे हैं। परंतु यह देखना भी अति महत्वपूर्ण है कि हाल ही की सदियों में आलोचनात्मक बाइबल आधारित धर्मविज्ञान कैसे विकसित हुआ है। हाल ही की सदियों में आलोचनात्मक बाइबल आधारित धर्मविज्ञान की एक विशेषता यह विकसित होती हुई धारणा रही है कि बाइबल के ऐतिहासिक दावे लगभग पूरी तरह अविश्वनीय हैं। सामान्यतः आलोचनात्मक विद्वानों ने पवित्रशास्त्र के बहुत से हिस्सों को गलत, धार्मिक कल्पना या यहाँ तक कि स्पष्ट धोखा कहकर अस्वीकार कर दिया है। इस दृष्टिकोण से, लाल समुद्र को पार करना दलदल से बहने वाली तेज हवा के बहाव को पार करने से बढ़कर कुछ नहीं था, या यह एक गुलामों की एक छोटी टोली थी जो बेड़ों के द्वारा मिस्र से भाग रही थी। कनान पर विजय अर्द्ध-खानाबदोश कबीलों और कनान के नगरवासियों के बीच स्थानीय युद्ध ही थे। जैसे-जैसे आलोचनात्मक धर्मविज्ञान आगे की ओर बढ़ा, तो कई मुख्य आलोचनात्मक विद्वानों ने वास्तव में संदेह किया कि अब्राहम एक ऐतिहासिक व्यक्ति था या नहीं, या यहाँ तक कि मूसा वास्तव में था भी या नहीं। उन्होंने यहाँ तक दावा किया कि यदि यीशु का अस्तित्व था भी, तो हो सकता है कि वह एक महान नैतिक शिक्षक रहा होगा, परंतु उसने निश्चित रूप में आश्चर्यकर्म नहीं किए और न ही वह मृतकों में से जी उठा।

अब, आप कल्पना कर सकते हैं कि पवित्रशास्त्र से कुछ प्राप्त करना आलोचनात्मक धर्मविज्ञानियों के लिए बहुत कठिन बन गया जब उन्होंने अपने विधिवत धर्मविज्ञान की रचना की। हमने उनसे केवल यही अपेक्षा की होगी कि वे बाइबल आधारित धर्मविज्ञान को एक तरफ रख देंगे क्योंकि उन्होंने सोचा था कि बाइबल भ्रामक ऐतिहासिक दावों से भरी हुई है। और आधुनिक समय के दौरान बहुतों की यही प्रतिक्रिया थी। परंतु जब आलोचनात्मक धर्मविज्ञानियों ने बाइबल के अधिकार को ठुकरा दिया तो बाइबल आधारित धर्मविज्ञान का क्षेत्र नष्ट नहीं हुआ। इसकी अपेक्षा, उन्होंने समकालीन धर्मविज्ञान के लिए पवित्रशास्त्र के प्रयोग के अन्य तरीकों को खोजा। बाइबल को सच्चे इतिहास के रूप में देखने की अपेक्षा, उन्होंने पवित्रशास्त्र को ऐतिहासिक दावों के रूप में प्रस्तुत प्राचीन धार्मिक भावनाओं की अभिव्यक्तियों के रूप में देखना आरंभ किया, और उन्होंने खोजा कि ये प्रचीन धार्मिक भावनाएँ और अनुभव आधुनिक मसीहियों के लिए लाभदायक हो सकते हैं।

बीसवीं सदी के प्रसिद्ध बाइबल आधारित धर्मविज्ञानी जी. अरनेस्ट राईट ने इस दृष्टिकोण को तब व्यक्त किया जब उन्होंने अपनी पुस्तक गॉड हू एक्ट्स (परमेश्वर जो कार्य करता है) में बाइबल आधारित धर्मविज्ञान को इस तरह से परिभाषित किया :

> इसलिए, बाइबल आधारित धर्मविज्ञान को एक विशेष इतिहास में परमेश्वर के कार्यों के अंगीकरण-संबंधी उच्चारण के रूप में और वहाँ से लिए गए महत्व के साथ परिभाषित किया जाना चाहिए।

ध्यान दें कि राईट ने यहाँ क्या कहा है। पहला, उसके दृष्टिकोण में, बाइबल आधारित धर्मविज्ञान "परमेश्वर के कार्यों" पर ध्यान केंद्रित करता है। परंतु राईट के पास एक बहुत ही विशेष भाव था जिसमें उसने "परमेश्वर के कार्यों" के बारे में बात की। घटनाओं के वास्तविक तरीके में घटित होने पर ध्यान केंद्रित करने की अपेक्षा राईट ने यह बल दिया कि बाइबल आधारित धर्मविज्ञान को बाइबल जैसी पुस्तकों में पाए जाने वाले परमेश्वर के कार्यों के "अंगीकरण-संबंधी उच्चारण" पर ध्यान देना चाहिए।

दूसरा, राईट ने यह भी माना कि बाइबल आधारित धर्मविज्ञान को पवित्रशास्त्र में पाए जाने वाले परमेश्वर के कार्यों के अंगीकरण-संबंधी उच्चारण "से लिए गए महत्व" पर ध्यान देना चाहिए। राईट की नज़र में पवित्रशास्त्र में पाया जाने वाला इतिहास अधिकांशतः काल्पनिक था। परंतु जब उसे सही तरीके से देखा जाता है, तो इसकी कहानियाँ धर्मवैज्ञानिक सत्य को दर्शाती हैं। अतः बाइबल आधारित धर्मविज्ञानी का कार्य पवित्रशास्त्र के काल्पनिक विवरणों के पीछे के धर्मवैज्ञानिक सत्यों को खोजना था।

आलोचनात्मक बाइबल आधारित धर्मविज्ञान में यह दृष्टिकोण एक अंतर के साथ उपयुक्त बैठता है जो कि आधुनिक धर्मविज्ञान में एक सामान्य सी बात हो गई है। कई जर्मन धर्मविज्ञानियों ने दो भिन्न शब्दों का प्रयोग करते हए वास्तविक ऐतिहासिक घटनाओं को बाइबल में प्रकट अंगीकरण-संबंधी इतिहास से अलग कर दिया। वास्तविक घटनाओं को शब्द हिस्टोरिया के द्वारा दर्शाया गया था। ये पवित्रशास्त्र की ऐसी घटनाएँ हैं जिन्हें आधुनिक वैज्ञानिक अनुसंधान के द्वारा प्रमाणित किया जा सकता था। परंतु अधिकांश "धार्मिक इतिहास-कथाएँ" जिन्हें हम बाइबल में पाते हैं, वे उनके दृष्टिकोण में वास्तव में इतिहास नहीं हैं; यह हेल्सगैशिश्ते - "छुटकारे का इतिहास" या "उद्धार का इतिहास" है। उद्धार का इतिहास, इतिहास-कथा के रूप में धार्मिक भावनाओं की अभिव्यक्ति है। छुटकारे का इतिहास उन घटनाओं का अंगीकरण-संबंधी उच्चारण है, जिन्हें हम बाइबल में पाते हैं।

आज भी अधिकांश आलोचनात्मक धर्मविज्ञानी जो पवित्रशास्त्र को ऐसे ही अस्वीकार नहीं कर देते, वे कुल मिलाकर बाइबल के इतिहास को हेल्सगैशिश्ते, "छुटकारे का इतिहास" "अंगीकरण-संबंधी, इतिहास के समान" धर्मवैज्ञानिक चिंतनों के रूप में देखते हैं। पवित्रशास्त्र की ऐतिहासिक विश्वसनीयता को ठुकराते हुए, वे यह पता लगाने के द्वारा अपने धर्मविज्ञान के लिए पवित्रशास्त्र का बचाव करते हैं कि यह मानवीय धार्मिक भावनाओं को कैसे दर्शाता है। हेल्सगैशिश्ते, अर्थात् इस्राएल और आरंभिक कलीसिया की परंपराएँ, सबसे समकालीन आलोचनात्मक बाइबल आधारित धर्मविज्ञान का केंद्र है, और कुछ सीमा तक इसके निष्कर्ष आधुनिक विधिवत या समकालीन धर्मविज्ञान को महत्वपूर्ण बनाते हैं।

अब क्योंकि हमने आलोचनात्मक धर्मविज्ञानियों के बीच बाइबल आधारित धर्मविज्ञान के विकासक्रम को एक शिक्षण-संकाय के रूप में आरेखित कर लिया है, इसलिए हमें अपने विचार की दूसरी धारा की ओर मुड़ना चाहिए : सुसमाचारिक बाइबल आधारित धर्मविज्ञान। यहाँ हम "सुसमाचारिक" शब्द का प्रयोग केवल इस अर्थ में करते हैं कि इन मसीहियों ने पवित्रशास्त्र के निर्विवाद अधिकार की पुष्टि करना निरंतर जारी रखा।

सुसमाचारिक घटनाक्रम

ख़ुशी की बात यह है कि पूरे संसार की कलीसिया की कई शाखाओं में ऐसे बहुत से मसीही रहे हैं जिन्होंने बाइबल के अधिकार के आलोचनात्मक इनकार का अनुसरण नहीं किया है। वैज्ञानिक खोज के मूल्य और महत्व का इनकार किए बिना, इन सुसमाचारिक लोगों ने निरंतर यह मान्यता रखी है कि पवित्रशास्त्र अपने सभी दावों में सच्चा है, उनमें भी जो वह इतिहास के विषय में दावा करता है। परंतु बाइबल के अधिकार के प्रति इन अटल प्रतिबद्धताओं के बावजूद भी, आधुनिक इतिहासवाद के कुछ महत्वपूर्ण प्रभाव सुसमाचारिक लोगों द्वारा पवित्रशास्त्र को देखने के तरीकों पर भी पड़े हैं।

सुसमाचारिक बाइबल आधारित धर्मविज्ञान की खोज करने के लिए, हम ऐसी दो दिशाओं की ओर ध्यान लगाएँगे जो आलोचनात्मक दृष्टिकोणों के हमारे विचार-विमर्श के समानांतर हैं : पहली,

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

आधुनिक सुसमचारिक बाइबल आधारित धर्मविज्ञान के आरंभिक चरण, और दूसरी, कुछ और समकालीन घटनाक्रम। हम प्रिंसटन थिओलोजिकल सेमीनरी में कार्यरत 19वीं सदी के अमेरिकी धर्मविज्ञानियों के बड़े ही प्रभावशाली दृष्टिकोणों पर ध्यान देने के द्वारा सुसमाचारिक बाइबल आधारित धर्मविज्ञान के आरंभिक चरणों को देखेंगे। पहले, हम चार्ल्स होज़ के दृष्टिकोण को रेखांकित करेंगे। और दूसरा, हम बेंजामिन बी. वॉरफील्ड के दृष्टिकोण को देखेंगे। आइए चार्ल्स होज़ द्वारा बाइबल आधारित धर्मविज्ञान को समझने के तरीके को देखने से आरंभ करें।

चार्ल्स होज़ का जीवनकाल 1797 से 1878 के बीच रहा और उसने स्वयं को मुख्यतः विधिवत धर्मविज्ञान के शिक्षण-संकाय के लिए समर्पित किया। सुनिए किस प्रकार होज़ ने तीन-पुस्तकों में लिखे अपने विधिवत धर्मविज्ञान के परिचय में बाइबल आधारित धर्मविज्ञान को विधिवत प्रक्रियाओं से अलग करके दर्शाया :

> यह बाइबल आधारित और विधिवत धर्मविज्ञान के बीच भिन्नता की रचना करता है। [बाइबल आधारित धर्मविज्ञान] का कार्य पवित्रशास्त्र के तथ्यों को सुनिश्चित करना और बताना है। [विधिवत धर्मविज्ञान] का कार्य उन तथ्यों को लेना, एक दूसरे के साथ और अन्य सजातीय सत्यों के साथ उनके संबंध को निर्धारित करना, साथ ही उन्हें प्रमाणित करना और उनके सांमजस्य और निरंतरता को प्रकट करना है।

जैसा कि हम यहाँ देखते हैं, होज़ ने बाइबल आधारित धर्मविज्ञान को एक व्याख्यात्मक शिक्षण-संकाय, अर्थात् पवित्रशास्त्र के तथ्यों के अध्ययन के रूप में परिभाषित किया। और साथ ही उसने विधिवत धर्मविज्ञान को एक ऐसे शिक्षण-संकाय के रूप में परिभाषित किया जो बाइबल आधारित धर्मविज्ञान में समझे गए तथ्यों को लेता है और उनके विभिन्न तार्किक संबंधों पर ध्यान देते हुए उन्हें एक दूसरे के साथ व्यवस्थित करता है।

आलोचनात्मक धर्मविज्ञानियों के विपरीत, होज़ ने पवित्रशास्त्र के अधिकार में विश्वास किया। और बाइबल के अधिकार के प्रति उसके समर्पण ने उसे यह सिखाने में प्रेरित किया कि मसीहियों का यह दायित्व है कि वे विधिवत धर्मविज्ञान को बाइबल आधारित धर्मविज्ञान के निष्कर्षों पर आधारित करें। पवित्रशास्त्र के इस या उस भाग को अस्वीकार करने और अन्यों को स्वीकार करने की अपेक्षा, होज़ ने बल दिया कि विधिवत धर्मविज्ञान को चाहिए कि वह बाइबल आधारित धर्मविज्ञान की पवित्रशास्त्र में की गई खोजों को तार्किक रूप में व्यवस्थित करने के द्वारा स्वयं को उनके प्रति समर्पित कर दे।

यद्यपि होज़ की मृत्यु के बहुत बाद तक भी उसके बहुत से दृष्टिकोणों ने सुसमाचारिक लोगों को प्रभावित करना जारी रखा है, परंतु फिर भी उसके उत्तराधिकारियों में से एक बेंजामिन बी. वारफील्ड, जिसका जीवनकाल 1851 से 1921 ईस्वी के बीच रहा, के अधीन सुसमाचारिक बाइबल आधारित धर्मविज्ञान में एक बड़ा परिवर्तन हुआ। बाइबल के अध्ययन में उसकी विशेषज्ञता ने उसे बाइबल आधारित धर्मविज्ञान की सुसमाचारिक अवधारणा में विशेष योगदानों को देने के लिए तैयार किया। सुनिए किस प्रकार वारफील्ड ने अपने प्रभावशाली लेख विधिवत धर्मविज्ञान का विचार में बाइबल में धर्मविज्ञान के संगठन या संयोजन के बारे में बात की है। अपने लेख के खंड पाँच में उसने इन शब्दों को लिखा है :

> विधिवत धर्मविज्ञान व्याख्यात्मक प्रक्रिया के द्वारा प्रस्तुत बिखरे हुए धर्मवैज्ञानिक विवरण का श्रृंखलाबद्ध रूप से संयोजन [तार्किक संगठन] नहीं है; यह पहले से ही श्रृंखलाबद्ध [तार्किक रूप से व्यवस्थित] विवरण, जो कि इसे बाइबल आधारित धर्मविज्ञान से मिला है, का संयोजन है . . . हम अपनी सबसे सच्ची विधिवत प्रक्रियाओं को एक ही बार में पवित्रशास्त्र के अलग-अलग धर्मसैद्धांतिक कथनों

> के साथ कार्य करने के द्वारा प्राप्त नहीं करते, बल्कि उन्हें उनके नियत क्रम और अनुपात में संयोजित करने के द्वारा प्राप्त करते हैं जब वे पवित्रशास्त्र के विभिन्न धर्मविज्ञानों में पाए जाते हैं।

इस अनुच्छेद में, वारफील्ड ने कम से कम तीन महत्वपूर्ण बिंदुओं को दर्शाया है : पहला, विधिवत धर्मविज्ञान को बाइबल में पाए जाने वाले अलग-अलग या असंबद्ध धर्मवैज्ञानिक कथनों का संयोजन या संगठन नहीं होना चाहिए। वारफील्ड से पहले, सुसमाचारिक लोग बाइबल को विधिवत धर्मवैज्ञानिक तर्कवाक्यों के स्त्रोत के रूप में देखने की प्रवृत्ति रखते थे, और उन्होंने इन तर्कवाक्यों को विधिवत धर्मविज्ञान की पारंपरिक पद्धतियों के अनुसार व्यवस्थित किया था। बाइबल की शिक्षाओं को ऐसे रूपों में सारगर्भित किया गया था जो उन्हें मौलिक विवरणों के समान देखते थे। परंतु वारफील्ड ने दर्शाया कि पवित्रशास्त्र की शिक्षाएँ बाइबल में पहले से ही तार्किक रूप में व्यवस्थित थीं। बाइबल तर्कवाक्यों का अव्यवस्थित संकलन नहीं है; इसका अपना एक तार्किक संगठन है, और इसके अपने धर्मवैज्ञानिक दृष्टिकोण हैं।

दूसरा, वारफील्ड के दृष्टिकोण से, पवित्रशास्त्र में धर्मविज्ञान को व्यवस्थित करने का केवल एक ही तरीका नहीं है। यह सुनिश्चित है कि बाइबल कभी अपना खंडन नहीं करती; इसकी सारी शिक्षाएँ सामंजस्यपूर्ण हैं। परंतु जैसा कि उसने कहा, बाइबल आधारित धर्मविज्ञान "पवित्रशास्त्र के विभिन्न धर्मविज्ञानों" के साथ व्यवहार करता है। बाइबल की पुस्तकों के मानवीय लेखकों ने अपने धर्मवैज्ञानिक दृष्टिकोणों को विभिन्न, यद्यपि पूरक रूपों में व्यक्त किया। उनके लेखों ने विभिन्न शब्दावलियों, संरचनाओं और प्राथमिकताओं को दर्शाया। प्रेरित पौलुस द्वारा धर्मविज्ञान को व्यक्त करने का तरीका ठीक वैसा नहीं था जैसा कि यशायाह का था; मत्ती ने धर्मविज्ञान को मूसा की अपेक्षा भिन्न शब्दों, महत्वों और दृष्टिकोणों में व्यक्त किया।

तीसरा, क्योंकि बाइबल आधारित धर्मविज्ञान पवित्रशास्त्र के "विभिन्न धर्मविज्ञानों" को पहचानता है, इसलिए "सच्ची विधिवत प्रक्रियाओं" का कार्य पवित्रशास्त्र की विविध धर्मवैज्ञानिक पद्धतियों को एक संपूर्ण एकता में लाना है। विधिवत धर्मविज्ञान का कार्य बाइबल के धर्मविज्ञानों को उनके "नियत क्रम और अनुपात" में समाहित कर देना है। सरल रूप में कहें तो, वारफील्ड ने विश्वास किया कि बाइबल आधारित धर्मविज्ञान का कार्य पवित्रशास्त्र में प्रस्तुत विभिन्न धर्मवैज्ञानिक पद्धतियों को पहचानना है। और विधिवत धर्मविज्ञान का कार्य पूरे पवित्रशास्त्र के विभिन्न धर्मविज्ञानों को एक संपूर्ण एकता में संयुक्त कर देना है। वारफील्ड के समय से लेकर हमारे समय तक, सुसमाचारिक बाइबल आधारित धर्मविज्ञानियों ने वास्तव में इसी आधारभूत पद्धति का पालन किया है। उन्होंने बाइबल के विभिन्न भागों के विशिष्ट धर्मवैज्ञानिक दृष्टिकोणों की खोज करने का प्रयास किया है, और विधिवत धर्मविज्ञान को बाइबल के सभी धर्मविज्ञानों को एक एकीकृत पद्धति में लाने का प्रयास समझा है।

होज़ और वारफील्ड की पृष्ठभूमि को अपने मन में रखते हुए, हम अब आगे के उन विकासक्रमों की ओर मुड़ सकते हैं जो सुममाचारिक बाइबल आधारित धर्मविज्ञान में हाल ही में हुए हैं। इसमें कोई संदेह नहीं है कि समकालीन सुममाचारिक बाइबल आधारित धर्मविज्ञान पर बाइबल के एक धर्मविज्ञानी का प्रभाव अन्य किसी और से अधिक पड़ा है, उसका नाम है गियरहार्डस फ़ोस, जिसका जीवनकाल 1862 से 1949 ईस्वी तक रहा। गियरहार्डस फ़ोस को 1894 में प्रिंसटन थिओलोजिकल सेमीनरी में बाइबल आधारित धर्मविज्ञान के शिक्षण-संकाय का पहला अध्यक्ष चुना गया। उसने होज़ और वारफील्ड के कार्यों को और आगे बढ़ाया, परंतु साथ ही उसने इस शिक्षण-संकाय को नई दिशाओं में भी मोड़ा।

वृहद् रूप में कहें तो, फ़ोस इस बात पर होज़ और वारफील्ड दोनों के साथ सहमत था कि बाइबल आधारित धर्मविज्ञान पवित्रशास्त्र की शिक्षा को खोजता है और विधिवत धर्मविज्ञान को आधिकारिक मार्गदर्शन प्रदान करता है। और इससे बढ़कर, फ़ोस इस बात पर भी वारफील्ड के साथ

सहमत हुआ कि बाइबल आधारित खरा धर्मविज्ञान बाइबल के उन विभिन्न धर्मविज्ञानों को पहचान लेगा जिन्हें विधिवत धर्मविज्ञान में संपूर्ण एकता में लाया जाना आवश्यक है।

परंतु फ़ोस ने एक ऐसे साझे धागे की ओर ध्यान आकर्षित करते हुए अपने अग्रगामियों से अलग मत रखा जो बाइबल के विभिन्न धर्मविज्ञानों में चलता है। उसने तर्क दिया कि पवित्रशास्त्र के विभिन्न धर्मविज्ञानों का छुटकारे के इतिहास पर साझा ध्यान था। उसकी मान्यता थी कि इतिहास में परमेश्वर के महान कार्य बाइबल के प्रत्येक भाग की शिक्षा के केंद्र का निर्माण करते हैं। इसी कारणवश, फ़ोस ने सिखाया कि बाइबल आधारित धर्मविज्ञान को उन तरीकों पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए जिनमें प्रत्येक लेखक ने स्वयं को परमेश्वर के महान कार्यों के साथ जोड़ा है। जैसा कि फ़ोस ने 1894 में अपने आरंभिक संबोधन में लिखा है :

> विधिवत धर्मविज्ञान एक दायरे को बनाने का प्रयास करता है, बाइबल आधारित धर्मविज्ञान एक रेखा को पुनः खींचने की कोशिश करता है . . . बाइबल आधारित और विधिवत धर्मविज्ञान के बीच ऐसा सच्चा संबंध है। धर्मसैद्धांतिक शिक्षाएँ वह मुकुट है जो उस संपूर्ण कार्य से निकल कर विकसित होता है, जिसे बाइबल आधारित धर्मविज्ञान पूरा कर सकता है।

फ़ोस के अनुसार, बाइबल आधारित धर्मविज्ञान उन तरीकों पर ध्यान केंद्रित करता है जिनमें बाइबल के लेखक इतिहास को दर्शाते हैं। यह इतिहास में परमेश्वर के महान कार्यों पर बाइबल के विभिन्न दृष्टिकोणों को और उन ईश्वरीय कार्यों के धर्मवैज्ञानिक महत्व को पहचानता है। तब विधिवत धर्मविज्ञान उन सबको धर्मविज्ञान की एकीकृत पद्धति में लेकर आता है जिन्हें बाइबल छुटकारे के इतिहास के विषय में सिखाती है। सुसमाचारिकवाद की लगभग प्रत्येक शाखा में बाइबल आधारित धर्मविज्ञान निरंतर इस आधारभूत केंद्र को रखता है।

अब क्योंकि हमने यह देख लिया है कि कैसे समकालीन सुसमाचारिक बाइबल आधारित धर्मविज्ञान छुटकारे के इतिहास पर पवित्रशास्त्र के मुख्य भाग के रूप में ध्यान देता है, इसलिए अब हम इस अध्याय के अपने तीसरे मुख्य विषय की ओर मुड़ने की स्थिति में हैं : सुसमाचारिक बाइबल आधारित धर्मविज्ञानी इतिहास और प्रकाशन के बीच के संबंध को कैसे समझते हैं।

इतिहास और प्रकाशन

बाइबल आधारित धर्मविज्ञान के लिए इतिहास और प्रकाशन से अधिक प्रमुख और कोई दो अवधारणाएँ नहीं हैं। जैसा कि हम देख चुके हैं, बाइबल आधारित धर्मविज्ञान इतिहास पर पूरे पवित्रशास्त्र को पिरोने वाले एकीकृत धागे के रूप में ध्यान केंद्रित करता है। इतिहास पर इस तरह ध्यान लगाने का एक कारण यह समझ है कि पवित्रशास्त्र में परमेश्वर का स्वयं का प्रकाशन बड़ी गहनता से ऐतिहासिक घटनाओं के साथ बंधा हुआ है।

बाइबल आधारित धर्मविज्ञान में इतिहास और प्रकाशन के बीच के संबंध को समझने के लिए, हम दो विषयों की जाँच करेंगे : पहला, हम देखेंगे कि किस प्रकार बाइबल आधारित धर्मविज्ञानी प्रकाशन को "कार्य और वचन" के रूप में परिभाषित करते हैं; और दूसरा, हम बाइबल में इतिहास और प्रकाशन की रूपरेखा की खोज करेंगे। आइए पहले इस विचार पर ध्यान दें कि ईश्वरीय प्रकाशन कार्य और वचन दोनों है।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

कार्य और वचन

इन महत्वपूर्ण अवधारणाओं की खोज करने के लिए हम तीन विषयों को देखेंगे : पहला, हम देखेंगे कि पवित्रशास्त्र उसके बारे में कैसे बात करता है, जिसे हम "कार्य प्रकाशन" कहते हैं; दूसरा हम उस आवश्यकता को देखेंगे जिसे हम "वचन प्रकाशन" या मौखिक प्रकाशन कहते हैं; और तीसरा, हम कार्य और वचन प्रकाशन के बीच आपसी संबंधों की जाँच करेंगे। आइए पहले हम "कार्य प्रकाशन" की अवधारणा की ओर मुड़ें।

कार्य प्रकाशन

हम सब अपने सामान्य अनुभव से जानते हैं कि लोग अपने बारे में कम से कम दो तरीकों में बातों को प्रकट करते हैं। एक ओर, वे हमें बता सकते हैं वे क्या क्या सोच रहे हैं। वे अपने बारे में बोल सकते हैं और यह भी कि वे क्या चाहते हैं। परंतु दूसरी ओर, हम लोगों के कार्यों के द्वारा उनके बारे में बहुत कुछ जान सकते हैं। जिन तरीकों से वे कार्य करते हैं, वे प्रकट करते हैं कि वे किस तरह के लोग हैं। जब वे पवित्रशास्त्र को देखते हैं, तो यह जल्द ही स्पष्ट हो जाता है कि बाइबल अक्सर यह बताती है कि परमेश्वर अपने कार्यों में स्वयं को प्रकट करता है। उदाहरण के लिए, भजन संहिता 98:2-3 में परमेश्वर के प्रकाशन के उत्सव को सुनिए :

> यहोवा ने अपना किया हुआ उद्धार प्रकाशित किया, उसने अन्यजातियों की दृष्टि में अपना धर्म प्रकट किया है। उसने इस्राएल के घराने पर की अपनी करूणा और सच्चाई की सुधि ली, और पृथ्वी के सब दूर दूर देशों ने हमारे परमेश्वर का किया हुआ उद्धार देखा है। (भजन संहिता 98:2-3)

ध्यान दें कि पद दो में भजनकार ने कहा कि परमेश्वर ने अपनी धार्मिकता को "प्रकाशित किया" है, उसने इब्रानी शब्द गा ला का प्रयोग किया जिसका अर्थ है उघाड़ना, परदा हटाना या प्रकट करना। भजनकार ने कहा कि परमेश्वर ने अन्यजातियों की दृष्टि में अपनी धर्मिकता को प्रकट या प्रकाशित किया है। परंतु यह अनुच्छेद कैसे कहता है कि परमेश्वर ने ऐसा किया? क्या यह जातियों के समक्ष "मैं धर्मी हूँ" शब्दों को बोलने के द्वारा था? इस वर्णन में ऐसा नहीं है। पद तीन के अनुसार परमेश्वर की धार्मिकता तब प्रकाशित हुई जब परमेश्वर ने कुछ किया । भजनकार कहता है कि परमेश्वर ने इस्राएल के घराने को स्मरण करते हुए कार्य को किया जिससे पृथ्वी की छोर तक के लोगों ने "हमारे परमेश्वर के किए हुए उद्धार को देखा है।" यहाँ भजनकार के मन में परमेश्वर की धार्मिकता का प्रकाशन या प्रकटीकरण था जब उसने अपने लोगों के छुड़ाया। वह प्रकाशन जिसकी बात भजनकार ने की है, वह परमेश्वर का एक कार्य था।

इस प्रकार का और अधिक आश्चर्यजनक "कार्य प्रकाशन" पूरी बाइबल में पाया जाता है। उदाहरण के लिए, सृष्टि के कार्य ने परमेश्वर के सामर्थ्य और चरित्र को प्रकट किया। मिस्र से इस्राएल के निर्गमन ने शत्रुओं पर उसके सामर्थ्य और अपने लोगों के लिए उसके प्रेम को प्रदर्शित किया। इसी प्रकार से, दाऊद के राजवंश की स्थापना, इस्राएल और यहूदा का बंधुआई में जाना, बंधुआई से वापस लौटना, मसीह का देहधारण, मसीह की मृत्यु और उसका पुनरूत्थान - बाइबल में उल्लिखित ये सब, और कई अन्य घटनाएँ परमेश्वर के चरित्र और उसकी इच्छा को प्रकट करती हैं। "कार्य प्रकाशन" की अवधारणा बाइबल आधारित धर्मविज्ञान के लिए आवश्यक है।

पहली नज़र में, यह शायद स्पष्ट न हो कि "कार्य प्रकाशन" की ओर इस परिवर्तन के मसीही धर्मविज्ञान पर बहुत ही महत्वपूर्ण प्रभाव पड़े हैं। इसलिए, हमें यह देखने के लिए एक पल रूकना चाहिए कि इस प्रकार के ध्यान ने क्या अंतर पैदा किया है। इस आधुनिक ऐतिहासिक ध्यान के महत्व को देखने का एक तरीका परमेश्वर-विज्ञान, अर्थात् परमेश्वर की अवधारणा, की धर्मशिक्षा को देखना है, और साथ

ही यह देखना है कि विधिवत धर्मविज्ञान और बाइबल आधारित धर्मविज्ञान इस विषय के साथ कैसे व्यवहार करते हैं।

एक पल के लिए वेस्टमिंस्टर लघु प्रश्नोत्तरी पर ध्यान दें कि वह एक पारंपरिक विधिवत धर्मवैज्ञानिक दृष्टिकोण का प्रतिनिधित्व करते हुए कैसे परमेश्वर को देखने के विषय में हमें सिखाती है। लघु प्रश्नोत्तरी का प्रश्न 4 यह पूछता है : "परमेश्वर क्या है?" और यह इस तरह से उत्तर देती है :

> परमेश्वर एक आत्मा है, वह अपने अस्तित्व, बुद्धि, सामर्थ्य, पवित्रता, न्याय, भलाई और सत्य में असीमित, अनंत और अपरिवर्तनीय है।

यह देखना कठिन नहीं है कि यद्यपि यह उत्तर पवित्रशास्त्र के अनुरूप है, फिर भी परमेश्वर को विधिवत धर्मविज्ञान में उसके अनंत और शाश्वत चरित्रों के आधार पर अमूर्त रूप में परिभाषित किया जाता है। परंतु तुलना करने के द्वारा, बाइबल आधारित धर्मविज्ञानी इतिहास में परमेश्वर के मूर्त कार्यों पर अधिक ध्यान देते हैं। और "कार्य प्रकाशन" पर दिए गए इसी ध्यान ने परमेश्वर-विज्ञान में एक भिन्न महत्व की ओर अगुवाई की है।

जब विशिष्ट सुसमाचारिक बाइबल आधारित धर्मविज्ञानियों से पूछा जाता है, "परमेश्वर क्या है?" तो उनकी प्रवृत्ति वेस्टमिंस्टर लघु प्रश्नोत्तरी जैसी प्रतिक्रिया देने की नहीं होती। अब, वे इस दृष्टिकोण से असहमत नहीं होंगे, बल्कि उनका बल और अधिक ऐतिहासिक है। बाइबल आधारित धर्मविज्ञानी कुछ ऐसा कहने के अधिक इच्छुक होते हैं, "परमेश्वर वह है जिसने इस्राएल को मिस्र की गुलामी से छुड़ाया;" "परमेश्वर वह है जिसने इस्राएलियों को बंधुआई में दंड दिया।" या वे शायद ऐसा कहेंगे, "परमेश्वर वह है जिसने अपने पुत्र को इस जगत में भेजा।" जैसा भी हो, परमेश्वर के विषय में प्राथमिक रूप से उसके अनंत चरित्रों के आधार पर सोचने की अपेक्षा, बाइबल आधारित धर्मविज्ञानी परमेश्वर के विषय में प्राथमिक रूप से इतिहास में किए गए उसके कार्यों के आधार पर सोचते हैं। और जो परमेश्वर-विज्ञान पर लागू होता है वह बाइबल आधारित धर्मविज्ञान के प्रत्येक पहलू पर भी लागू होता है।

इसके साथ-साथ, यद्यपि सुसमाचारिक बाइबल आधारित धर्मविज्ञानियों ने "कार्य प्रकाशन" के महत्व पर बल दिया है, परंतु फिर भी उन्होंने "वचन प्रकाशन," अर्थात् परमेश्वर की ओर से मौखिक प्रकाशन, की महत्वपूर्ण आवश्यकता की पुष्टि भी की है। पवित्रशास्त्र में परमेश्वर केवल कार्य ही नहीं करता; बल्कि वह अपने कार्यों के बारे में बात भी करता है। वह अपने कार्यों को वचनों के द्वारा स्पष्ट करता है।

वचन प्रकाशन

मौखिक या "वचन प्रकाशन" कई कारणों से अत्यावश्यक है, परंतु हम परमेश्वर के कार्यों के विषय में केवल उन दो बातों का ही उल्लेख करेंगे जो "वचन प्रकाशन" को बहुत महत्वपूर्ण बना देती हैं : एक ओर, घटनाओं का अस्पष्ट महत्व; और दूसरी ओर घटनाओं का वृत्ताकार महत्व। आइए पहले इस पर ध्यान दें कि पवित्रशास्त्र में घटनाओं की अस्पष्टता कैसे "वचन प्रकाशन" को आवश्यक बनाती है।

जब हम यह कहते हैं कि परमेश्वर के कार्य अस्पष्ट हैं, तो हमारे कहने का अर्थ यह है कि उसके कार्यों का महत्व मनुष्यों को सदैव सिद्ध रूप से दिखाई नहीं देता। यद्यपि परमेश्वर सदैव पूरी तरह से समझता है कि वह क्या कर रहा है, फिर भी उसके कार्यों की शब्दों के द्वारा व्याख्या की जानी या उन्हें स्पष्ट किए जाने की आवश्यकता होती है ताकि हम उनके महत्व को समझ सकें।

प्रतिदिन के जीवन से एक उदाहरण पर ध्यान दें। कल्पना करें कि आप एक कक्षा में कुछ अन्य विद्यार्थियों के साथ बैठे हैं, और अचानक से, बिना किसी चेतावनी के एक विद्यार्थी उठ खड़ा होता है। वह कुछ नहीं कहता; वह केवल खड़ा है। निस्संदेह, आप जान नहीं पाएँगे कि इस बात से क्या समझा जाए; यह बहुत अस्पष्ट है। आप शायद मन ही मन यह सोचेंगे, "वह खड़ा क्यों हुआ है? क्या हो रहा है?"

वास्तव में, प्रोफेसर शायद अपने व्याख्यान को बंद कर दे और उस विद्यार्थी से पूछे कि वह क्या कर रहा है। वास्तव में, प्रत्येक व्यक्ति उसके कार्य के महत्व को स्पष्ट करने के मौखिक संप्रेषण की आशा में होगा।

लगभग इसी तरह से, पवित्रशास्त्र में दर्शाए गए परमेश्वर के कार्य अक्सर सीमित और पापमय मनुष्यों के लिए अस्पष्ट होते हैं। उन्हें भी मौखिक व्याख्या, शब्दों में स्पष्टीकरण की आवश्यकता होती हैं। उदाहरण के लिए, उस समय के विषय में विचार करें जब इस्राएली बाबुल की बंधुआई से वापस लौटे और उन्होंने मंदिर का पुनर्निर्माण करना आरंभ किया। एज्रा 3:10-12 में हम इन शब्दों को पढ़ते हैं :

> जब राजमिस्त्रियों ने यहोवा के मंदिर की नींव डाली . . . तब सब लोगों ने यह जानकर कि यहोवा के भवन की नींव अब पड़ रही है, ऊँचे शब्द से जय जयकार किया। परंतु बहुतेरे याजक और लेवीय और पूर्वजों के घरानों के मुख्य पुरूष . . . जिन्होंने पहला भवन देखा था, जब उस भवन की नींव उनकी आँखे के सामने पड़ी तब वे फूट फूटकर रोने लगे और बहुतेरे आनन्द के मारे ऊँचे शब्द से जय जयकार कर रहे थे। **(एज्रा 3:10-12)**

बाइबल के इतिहास में हम यहाँ एक घटना को देखते हैं - इस्राएल के बंधुआई से लौटने के बाद मंदिर की नींव रखे जाने में परमेश्वर का महान कार्य। परंतु यह घटना उन लोगों के लिए अस्पष्ट थी जिन्होंने इसे देखा।

कुछ लोगों ने मंदिर की नींव को देखा और आनंदित हुए क्योंकि उन्होंने माना कि यह एक महान आशीष थी। परंतु अन्य फूट-फूटकर रोए क्योंकि वे देख सकते थे कि नए मंदिर की तुलना सुलेमान के मंदिर से नहीं हो सकती थी। परमेश्वर की ओर से मौखिक संदेश के बिना, इस घटना को किसी भी तरह से देखा जा सकता था। इसीलिए एज्रा की पुस्तक बंधुआई के बाद मंदिर के निर्माण के सच्चे महत्व को स्पष्ट करने में काफी समय बिताती है।

इसी प्रकार, मरकुस 3:22-23 में हम पढ़ते हैं कि कैसे यीशु द्वारा दुष्टात्माओं को निकालने के कार्य को कुछ लोगों ने गलत समझ लिया था और कैसे यीशु ने अपने कार्यों की सच्ची व्याख्या दी थी।

> शास्त्री भी जो यरूशलेम से आए थे, यह कहते थे, "उसमें शैतान है," और "वह दुष्टात्माओं के सरदार की सहायता से दुष्टात्माओं को निकालता है।" इसलिए वह उन्हें पास बुलाकर उनसे दृष्टांतों में कहने लगा, "शैतान कैसे शैतान को निकाल सकता है?" **(मरकुस 3:22-23)**

इन महान कार्यों को देखने वाले कुछ लोगों ने गलत रूप से यह निष्कर्ष निकाला कि दुष्टात्माओं को शैतान की शक्ति के द्वारा निकाला जा रहा था, परंतु यीशु ने अपने कार्यों को अपने शब्दों के साथ प्रकट किया ताकि यह स्पष्ट हो जाए कि उसने परमेश्वर की सामर्थ्य में कार्य किया था।

बाइबल में परमेश्वर के कार्यों की अस्पष्टता यह स्पष्ट करने में सहायता करती है कि "वचन प्रकाशन" निरंतर "कार्य प्रकाशन" के साथ क्यों रहा। परमेश्वर के मौखिक प्रकाशन ने घटनाओं को इसलिए स्पष्ट किया ताकि उनका सच्चा महत्व प्रकट हो जाए।

कुछ सीमा तक अस्पष्ट होने के अतिरिक्त, "कार्य प्रकाशन" को "वचन प्रकाशन" के साथ भी जोड़ा जाता है क्योंकि घटनाएँ अपने महत्व में वृत्ताकार होती हैं। कई रूपों में, बाइबल की घटना तालाब में गिराए गए पत्थर के समान होती है। आप जानते हैं तब क्या होता है। पानी प्रत्येक दिशा की ओर लहराता है, उस तालाब के धरातल पर तैर रही प्रत्येक वस्तु को स्पर्श करता है। पत्थर को गिराने का

प्रभाव वृत्ताकार होता है; यह पूरे तालाब में फ़ैल जाता है। लगभग इसी तरह से, पवित्रशास्त्र की घटनाएँ अपने महत्व में वृत्ताकार हैं।

इस्राएल द्वारा लाल समुद्र को पार करने की घटना के उदाहरण को लें। हम सब जानते हैं कि पवित्रशास्त्र कैसे इसका वर्णन करता है कि यह परमेश्वर द्वारा अपने लोगों को मिस्रियों की गुलामी से छुड़ाना था। परंतु हम यह भी जानते हैं कि लाल समुद्र के जल में व्यवधान डालने के अन्य कई महत्व भी थे। उदाहरण के लिए, शायद इससे उस क्षेत्र का समुद्री जीवन प्रभावित हुआ हो और फलस्वरूप स्थानीय मछली उद्योग में बाधा पहुँची हो। यह परिणाम शायद आज हमें महत्वपूर्ण न लगते हों, परंतु यह उन लोगों के लिए महत्वपूर्ण थे जो उस समय उस क्षेत्र में रह रहे थे। इससे भी बढ़कर, मिस्रियों की सेना के समुद्र में डूब जाने के मिस्रियों के लिए तरह-तरह के महत्व थे। पत्नियों ने अपने पतियों को खोया; बच्चों ने अपने पिताओं को खोया। इस घटना के असंख्य प्रभावों की कल्पना करना कठिन है।

जब हम महसूस करते हैं कि लाल समुद्र को पार करने जैसी घटनाओं के वृत्ताकार महत्व थे, तो जो प्रश्न शेष रह जाता है वह यह है : इन सारे अर्थों में से कौनसा ऐसा अर्थ होना चाहिए जिस पर हमें ध्यान देना है? जब हम पवित्रशास्त्र की एक घटना को समझने का प्रयास करते हैं तो कौनसा महत्व हमारे लिए सबसे अधिक महत्वपूर्ण है? उत्तर बहुत ही सरल है : परमेश्वर ने अपने "वचन प्रकाशन" के द्वारा उन सबसे महत्वपूर्ण महत्वों को प्रकाशित कर दिया जिन्हें वह चाहता था कि उसके लोग समझ लें। परमेश्वर की अपने कार्यों की मौखिक व्याख्या के बिना, हम यह नहीं जान पाएँगे कि परमेश्वर के महान कार्यों से उचित धर्मवैज्ञानिक अर्थों को कैसे प्राप्त करें।

यह देख लेने के बाद कि कार्य और वचन पवित्रशास्त्र में एक दूसरे के साथ साथ चलते हैं, अब हमें अपने ध्यान को उन तरीकों की ओर मोड़ना चाहिए जिनमें ये दो प्रकार के प्रकाशन परस्पर संबंधित हैं। बाइबल आधारित धर्मविज्ञान में कार्य और वचन प्रकाशन किन रूपों में एक दूसरे के साथ संबंधित हैं।

परस्पर संबंध

हमारे उद्देश्यों के लिए हम तीन प्रकार के वचन प्रकाशन के आधार पर इन संबंधों के विषय में बात करेंगे : पहला, दूरदर्शी "वचन प्रकाशन," अर्थात् ऐसे वचन जो उन घटनाओं से पहले आते हैं जिनको वे स्पष्ट करते हैं; दूसरा समकालिक "वचन प्रकाशन" या ऐसे वचन जिन्हें उन घटनाओं के साथ-साथ दिया जाता है जिनको वे स्पष्ट करते हैं; और तीसरा पूर्वव्यापी "वचन प्रकाशन," अर्थात् ऐसे शब्द जो उन घटनाओं के बाद आते हैं जिनको वे स्पष्ट करते हैं।

पहला, पवित्रशास्त्र ऐसे समयों के कई उदाहरण देता है जब ईश्वरीय वचन ईश्वरीय कार्यों से पहले आए थे। ऐसी परिस्थितियों में परमेश्वर के वचन ने परमेश्वर के कार्य के घटित होने से पहले उसकी व्याख्या की या उसे स्पष्ट किया। हम इस तरह के "वचन प्रकाशन" को अक्सर पूर्वानुमान या भविष्यद्वाणी कहते हैं।

कई बार, परमेश्वर के समकालिक "वचन प्रकाशन" ने निकट भविष्य में घटने वाली घटनाओं के बारे में बताया और अक्सर ऐसे लोगों को बताया जो प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से उस घटना को देखेंगे। उदाहरण के लिए, निर्गमन 3:7-8 में, इससे पहले कि मूसा इस्राएल के लोगों को छुड़ाने के लिए मिस्र जाता, परमेश्वर ने वह सब बता दिया जो होने वाला था।

> फिर यहोवा ने कहा, "मैं ने अपनी प्रजा के लोग जो मिस्र में हैं, उनके दुःख को निश्चय देखा है; और उनकी जो चिल्लाहट परिश्रम करानेवालों के कारण होती है उसको भी मैं ने सुना है, और उनकी पीड़ा पर मैंने चित्त लगाया है; इसलिए अब मैं उतर आया हूँ कि उन्हें मिस्रियों के वश से छुड़ाऊँ, और उस देश से निकालकर

> एक अच्छे और बड़े देश में, जिसमें दूध और मधु की धाराएँ बहती हैं . . . पहुँचाऊँ।" (निर्गमन 3:7-8)

मूसा को कहे परमेश्वर के वचनों ने उसका पूर्वानुमान लगाया जो परमेश्वर मिस्र में करने वाला था। वे परमेश्वर के भविष्य के कार्य के महत्व को दर्शाने वाले दूरदर्शी वचन थे। इन शब्दों को सुनने पर मूसा का कार्य मिस्र में उसके कार्य को देखने के लिए एक विशेष तरीके से स्वयं को तैयार करना था। उसे परमेश्वर द्वारा इस्राएल के छुटकारे का साधन बनना था। मिस्र में किए जाने वाले उसके आगामी प्रयास केवल मानवीय घटनाएँ नहीं थीं; उसे अपनी सेवकाई को इसके वास्तविक रूप से बिलकुल भी कम नहीं करना था - अर्थात् परमेश्वर का महान कार्य जिसके द्वारा इस्राएल को प्रतिज्ञा की भूमि की आशीषों में लाया जाएगा।

अन्य समयों पर, परमेश्वर के दूरदर्शी "वचन प्रकाशन" ने दूर भविष्य में घटित होने वाली घटनाओं के बारे में बात की, इतनी दूर की कि जिन्होंने इसे पहली बार सुना था वे इस घटना का अनुभव नहीं करेंगे। ऐसे विषयों में "कार्य प्रकाशन" से बहुत पहले "वचन प्रकाशन" आ गया। उदाहरण के लिए, भविष्यद्वक्ता यशायाह ने यशायाह 9:6-7 में आने वाले महान मसीहा के बारे में इस तरह से बात की :

> क्योंकि हमारे लिए एक बालक उत्पन्न हुआ, हमें एक पुत्र दिया गया है; और प्रभुता उसके काँधे पर होगी, और उसका नाम अद्भुत युक्ति करनेवाला पराक्रमी परमेश्वर, अनन्तकाल का पिता और शान्ति का राजकुमार रखा जाएगा। उसकी प्रभुता सर्वदा बढ़ती रहेगी, और उसकी शान्ति का अंत न होगा। (यशायाह 9:6-7)

यहाँ पर यशायाह ने एक राजकीय पुत्र के बारे में बात की जो परमेश्वर के लोगों पर राज्य करेगा और अपने शासन का असीमित विस्तार करेगा। उसने यीशु, अर्थात् मसीहा के बारे में बात की। परंतु ये शब्द मसीह के आगमन से लगभग सात सौ वर्ष पहले कहे गए थे। उन्होंने निश्चित रूप से यशायाह के दिनों में परमेश्वर के लोगों को आशा प्रदान की, परंतु जिन लोगों ने सबसे पहले "वचन प्रकाशन" को सुना उन्होंने उस ईश्वरीय कार्य को कभी देखा भी नहीं जिसका उल्लेख उसने किया।

अतः हम देखते हैं कि विभिन्न रूपों में परमेश्वर का दूरदर्शी "वचन प्रकाशन" उसके लोगों को इसलिए दिया गया ताकि वे घटनाओं के होने से पहले ही उनके महत्व की अंतर्दृष्टि को प्राप्त कर लें। हम इस तरह के प्रकाशन को पूरे पवित्रशास्त्र में देखते हैं।

दूसरा, यह महसूस करना भी महत्वपूर्ण है कि पवित्रशास्त्र में कई बार परमेश्वर एक घटना के घटित होने के समकालिक, अर्थात् साथ-साथ बात करता है। अब निस्संदेह, पवित्रशास्त्र में परमेश्वर के वचन और कार्य यदाकदा ही एक साथ घटित होते हैं। परंतु परमेश्वर अक्सर एक घटना की पर्याप्त निकटता में बात करता है कि इसे समकालिक के रूप में माना जा सकता है। उसने अक्सर अपना "वचन प्रकाशन" उस समय दिया जब उसने कार्य किया। उदाहरण के लिए, निर्गमन 19:18-21 में परमेश्वर के कार्यों और वचनों को सुनिए :

> और यहोवा जो आग में होकर सीनै पर्वत पर उतरा था, इस कारण समस्त पर्वत धुएँ से भर गया; और उसका धुआँ भट्ठे का सा उठ रहा था, और समस्त पर्वत बहुत काँप रहा था। फिर जब नरसिंगे का शब्द बढ़ता और बहुत भारी होता गया, तब मूसा बोला और परमेश्वर ने वाणी सुनकर उसको उत्तर दिया . . . यहोवा ने मूसा से कहा, "नीचे उतर के लोगों को चेतावनी दे, कहीं ऐसा न हो कि वे बाड़ा तोड़ के यहोवा के पास देखने को घुसें, और उनमें से बहुत से नष्ट हो जाएँ।" (निर्गमन 19:18-21)

इस अनुच्छेद में परमेश्वर का सामर्थी कार्य अग्नि, धुएँ, और सीनै पर्वत के ऊपरी हिस्से के हिंसक रूप से काँपने में परमेश्वर का प्रकटीकरण था। जब परमेश्वर इस महान कार्य को कर रहा था, तो उसने "वचन प्रकाशन" की घोषणा की जिसने उसके महत्व को स्पष्ट किया जो वह लोगों को पर्वत के पास न आने की चेतावनी देने के द्वारा कर रहा था। अतः हम देखते हैं कि अक्सर पवित्रशास्त्र में परमेश्वर ने "वचन प्रकाशन" देने के साथ ही साथ कार्य भी किया ताकि उसके कार्य उन लोगों के द्वारा समझ लिए जाएँ जिन्होंने उसे देखा था।

तीसरा, इस सच्चाई से अवगत होना भी महत्वपूर्ण है कि परमेश्वर का "वचन प्रकाशन" अक्सर पूर्वव्यापी होता है, यह घटनाओं की विशेषता को उनके घटने के बाद स्पष्ट करता है। ऐसे विषयों में, परमेश्वर ने कुछ किया और इनके विषय में उन लोगों से बात की जो उसके कार्यों के होने के बाद रहे। वास्तव में, कुल मिलाकर यह वह सबसे बारंबार चलने वाला तरीका है जिसमें ईश्वरीय "वचन प्रकाशन" पवित्रशास्त्र में हमारे पास आता है।

कई बार, परमेश्वर ने निकटस्थ रूप से बात की, अर्थात् घटना के घटित होने के ठीक बाद। इन समयों में उसने अक्सर स्वयं को ऐसे लोगों पर प्रकट किया जिन्होंने प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से उसके कार्यों को देखा था। उदाहरण के लिए, निर्गमन 20:2-3 को सुनिए, जहाँ परमेश्वर ने इस्राएल के मिस्र में से छुटकारे की घटना के ठीक बाद उसके महत्व को स्पष्ट किया। वहाँ पर हम इन शब्दों को पढ़ते हैं :

> मैं तेरा परमेश्वर यहोवा हूँ, जो तुझे दासत्व के घर अर्थात् मिस्र देश से निकाल लाया है। तू मुझे छोड़कर दूसरों को ईश्वर करके न मानना। (निर्गमन 20:2-3)

प्रभु ने इस्राएलियों के समक्ष स्पष्ट किया कि उनका मिस्र से बाहर निकलकर आने का अनुभव कोई सामान्य घटना नहीं थी। यह उसका व्यक्तिगत और प्रत्यक्ष छुटकारा था। इससे बढ़कर, इस "वचन प्रकाशन" ने परमेश्वर के छुटकारे के कार्य के एक अर्थ को स्पष्ट किया। क्योंकि परमेश्वर ने उन्हें छुड़ाया था, इसलिए इस्राएल को किसी अन्य ईश्वर की आराधना नहीं करनी चाहिए। परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्यता की शर्त एक पूर्वव्यापी वचन था, जिसने उन लोगों के समक्ष इस्राएल के महान छुटकारे के महत्व को स्पष्ट किया, जिन्होंने वास्तव में उसे होते हुए देखा था।

फिर भी, अन्य अवसरों पर, दूरगामी पूर्वव्यापी वचन प्रकाशन परमेश्वर के लोगों के पास "कार्य प्रकाशन" के घटित होने के लंबे समय के बाद आया। यह उन लोगों को दिया गया जो उस समय नहीं रह रहे थे जब घटनाएँ घटित हुई थीं। उदाहरण के लिए, उत्पत्ति 1:27 में हम मनुष्यजाति की सृष्टि के इस विवरण को पढ़ते हैं :

> तब परमेश्वर ने मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार उत्पन्न किया, अपने ही स्वरूप के अनुसार परमेश्वर ने उसको उत्पन्न किया; नर और नारी करके उसने मनुष्यों की सृष्टि की। (उत्पत्ति 1:27)

इस पूर्वव्यापी वचन के मूल प्राप्तकर्ता वे इस्राएली थे जिन्होंने निर्गमन के बाद मूसा का अनुसरण किया था, और वे आदम और हव्वा की रचना के हजारों वर्षों के बाद जीवित रहे थे। जैसा भी हो, परमेश्वर ने उन्हें सृष्टि में मनुष्यजाति की मूल भूमिका की जानकारी देने के लिए यह "वचन प्रकाशन" प्रदान किया। अतः कई भिन्न तरीकों में परमेश्वर का वचन अक्सर उसके कार्यों का अनुसरण करता है और घटनाओं के घटित होने के बाद लोगों को उनकी समझ प्रदान करता है। इस तरह का वचन प्रकाशन संपूर्ण पवित्रशास्त्र में प्रकट होता है।

यह देख लेने के बाद कि बाइबल आधारित धर्मविज्ञान इस बात पर बल देता कि इतिहास और प्रकाशन पवित्रशास्त्र में कैसे परस्पर संबंधित हैं, अब हमें दूसरे विषय की ओर मुड़ने की जरुरत है : बाइबल में इतिहास और प्रकाशन की रूपरेखा। बाइबल हजारों वर्षों से भी अधिक समय की हजारों

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

घटनाओं का उल्लेख करती है। और बाइबल आधारित धर्मविज्ञान का एक लक्ष्य इन असंख्य घटनाओं के बीच की पद्धतियों और रूपरेखाओं को पहचानना है।

रूपरेखा

यह खोजने के लिए कि कैसे बाइबल आधारित धर्मविज्ञानियों ने पवित्रशास्त्र में इतिहास और प्रकाशन की रूपरेखा को समझा था, हम तीन विषयों को स्पर्श करेंगे; पहला, पवित्रशास्त्र के इतिहास में परमेश्वर के प्रकाशन का लक्ष्य; दूसरा, पवित्रशास्त्र में प्रकाशन का उठाना और गिरना; और तीसरा, पवित्रशास्त्र में प्रकाशन का संगठित विकास। आइए पहले बाइबल में इतिहास के लक्ष्य पर ध्यान दें।

लक्ष्य

जब हम पवित्रशास्त्र के भागों को पढ़ते हैं तो इस बात के प्रति कोई संदेह नहीं हो सकता कि परमेश्वर ने इतिहास को अपेक्षाकृत तात्कालिक लक्ष्यों की ओर आगे बढ़ाया। नूह के दिनों में उसने संसार में एक नए आरंभ को लाने का कार्य किया। अब्राहम के समक्ष स्वयं को प्रकट करने का उसका लक्ष्य अपने प्रति विशेष लोगों को बुलाना था। मिस्र में से पुराने नियम के इस्राएल के छुटकारे का लक्ष्य प्रतिज्ञा की भूमि में राष्ट्र के रूप में पुराने नियम में अपने विशेष लोगों को स्थापित करना था। दाऊद और उसके पुत्रों को इस्राएल के स्थाई राजवंश के रूप में चुनने का उद्देश्य अपने लोगों को राजकीय महिमा प्रदान करना था। यीशु के जीवन, मृत्यु और पुनरूत्थान का लक्ष्य परमेश्वर के लोगों के लिए अनंत उद्धार को सुरक्षित करना था।

बाइबल के इतिहास के प्रत्येक चरण में परमेश्वर के पास विशेष उद्देश्य और लक्ष्य थे जिन्होंने उसके कार्य और वचन प्रकाशन का मार्गदर्शन किया। बाइबल आधारित धर्मविज्ञानी अपने काफी समय को इन विविध लक्ष्यों को चित्रित करने में व्यतीत करते हैं। परंतु इसके साथ-साथ, रोमियों 11:36 में प्रेरित पौलुस ने इतिहास के परम लक्ष्य की ओर संकेत किया है।

> क्योंकि उसी [परमेश्वर] की ओर से, और उसी के द्वारा और उसी के लिए सब कुछ है। उसकी महिमा युगानुयुग होती रहे। आमीन। (रोमियों 11:36)

जैसा कि पौलुस ने यहाँ पर लिखा है, सब कुछ आरंभ से परमेश्वरकी ओर से हैं। सब कुछ परमेश्वर के संभाले रखने वाले सामर्थ्य के द्वारा निरंतर बना रहता है। और सब कुछ "उसी के लिए" है, अर्थात् वह परमेश्वर की महिमा और स्तुति के लिए है। सारांश में, परमेश्वर अपनी सृष्टि के इतिहास को इस तरह से व्यवस्थित करता है कि यह अंततः उसके लिए असीमित महिमा को लेकर आए।

विभिन्न बाइबल आधारित धर्मविज्ञानियों ने इस व्यापक ईश्वरीय उद्देश्य का वर्णन विभिन्न तरीकों से किया है। उदाहरण के लिए, कुछ लोग पवित्रशास्त्र के मुख्य केंद्र के रूप युगांतविज्ञान या अंत के दिनों के विषय में अपेक्षाकृत सामान्य रूप में बात करते हैं। वहीं अन्य लोगों ने विभिन्न तरीकों में तर्क दिया है कि बाइबल मसीहकेंद्रित है, जो मुख्यतः मसीह पर ध्यान केंद्रित करती है। इन और अन्य दृष्टिकोणों के पास देने के लिए बहुत कुछ है, परंतु इन अध्यायों में हम इस पृथ्वी पर परमेश्वर के राज्य की स्थापना के रूप में केवल संपूर्ण इतिहास के लक्ष्य के बारे में ही बात करेंगे। सरल रूप में कहें तो, हम बाइबल आधारित इतिहास के बारे में ऐसी प्रक्रिया के रूप में बात करेंगे जिसके द्वारा अंततः परमेश्वर अपने राज्य को पृथ्वी की छोर तक फैलाते हुए प्रत्येक प्राणी के सामने महिमा प्राप्त करेगा।

हम सब जानते हैं कि यीशु ने मत्ती 6:10 में हमें इस लक्ष्य के साथ प्रार्थना करने की शिक्षा दी है, जहाँ उसने इन शब्दों को कहा है :

> तेरा राज्य आए।
> तेरी इच्छा जैसी स्वर्ग में पूरी होती है,
> वैसे पृथ्वी पर भी हो। **(मत्ती 6:10)**

संपूर्ण संसार के इतिहास का ईश्वरीय लक्ष्य पृथ्वी के प्रत्येक छोर तक परमेश्वर के सिद्ध स्वर्गीय शासन का विस्तार है। जब परमेश्वर की इच्छा पृथ्वी पर उसी सिद्ध रूप में पूरी हो जैसे स्वर्ग में होती है, तो प्रत्येक प्राणी परमेश्वर के सामने घुटने टेक देगा और ईश्वरीय राजा, सब वस्तुओं के सर्वोच्च सृष्टिकर्ता के रूप में सम्मान देगा। उस समय, इतिहास का परम लक्ष्य पूरा हो जाएगा।

अब, यद्यपि ब्रह्मांड की प्रत्येक घटना इसी बड़े लक्ष्य की ओर बढ़ रही है, परंतु फिर भी पवित्रशास्त्र विशेषकर उन घटनाओं पर ध्यान केंद्रित करता है जो परमेश्वर के परम उद्देश्य के केंद्र में हैं। वे पता लगाते हैं कि कैसे कुछ ऐतिहासिक घटनाएँ संपूर्ण संसार में परमेश्वर के राज्य को फैलाने के लक्ष्य को प्राप्त करने में महत्वपूर्ण हैं। हम सब बाइबल की कहानी की मूल रूपरेखा को जानते हैं। बाइबल के आरंभिक अध्याय दर्शाते हैं कि कैसे परमेश्वर ने सृष्टि को व्यवस्थित करने और अदन की वाटिका में अपने स्वरूप को रखने के द्वारा और मनुष्यजाति को इस पृथ्वी की छोर तक अदन की खुशहाली को फैलाने की आज्ञा देने के द्वारा इस अव्यवस्थित संसार को परिवर्तित करना आरंभ किया। परंतु पवित्रशास्त्र के आरंभिक अध्याय यह वर्णन भी करते हैं कि कैसे मनुष्यजाति ने ईश्वरीय आदेश के विरूद्ध विद्रोह किया और इस संसार में भ्रष्टता और मृत्यु को ले आई।

शेष पुराना नियम यह दर्शाता है कि कैसे परमेश्वर ने इस्राएल को अपने विशेष लोगों के रूप में चुना और उन्हें आदेश दिया कि वे परमेश्वर के राज्य को पृथ्वी की अंतिम छोर तक फैलाने में शेष मनुष्यजाति की अगुवाई करें। जैसा कि पुराना नियम हमें बताता है, परमेश्वर ने इस्राएल के द्वारा बहुत कुछ पूरा किया, परंतु इस्राएल बुरी तरह से असफल भी हुआ।

इन अफलताओं के बाद भी, परमेश्वर ने अपने बड़े उद्देश्य को छोड़ नहीं दिया। जैसा कि नया नियम दर्शाता है, परमेश्वर ने अपने अनंत पुत्र को इस संसार में भेजा। उसकी मृत्यु के द्वारा, परमेश्वर ने उनकी अतीत की अफलताओं को सुधारा और पृथ्वी के सब राष्ट्रों में से अपने लिए एक प्रजा को छुड़ाया। और मसीह के पुनरूत्थान और स्वर्गारोहण के द्वारा, उसकी देह (कलीसिया) के द्वारा पवित्र आत्मा की सेवकाई और उसके महिमामय पुनरागमन के द्वारा, मसीह उस कार्य को पूरा कर रहा है जो मूल रूप से मनुष्यजाति को दिया गया था। जैसा कि हम प्रकाशितवाक्य 11:15 में पढ़ते हैं, मसीह को ऐसे व्यक्ति के रूप में ऊँचे पर उठाया गया है जो परमेश्वर के राज्य को वैसे ही पृथ्वी पर लाएगा, जैसा वह स्वर्ग में है।

> जगत का राज्य हमारे प्रभु का और उसके मसीह का हो गया, और वह युगानुयुग राज्य करेगा। **(प्रकाशितवाक्य 11:15)**

बाइबल आधारित धर्मविज्ञान के इस दृष्टिकोण में बाइबल के इतिहास की प्रत्येक घटना इस बड़ी योजना का हिस्सा है। पूरी बाइबल में पाए जाने वाले विभिन्न प्रकार के ईश्वरीय कार्य, बड़े और छोटे, साधारण और असाधारण, मसीह के कार्य में अपनी पूर्णता को पाते हैं जो नए आकाश और नई पृथ्वी पर अपने राज्य की स्थापना करने के द्वारा परमेश्वर को परम महिमा प्रदान करेगा।

यद्यपि बाइबल के इतिहास का लक्ष्य मसीह में विश्वव्यापी राज्य की स्थापना करने के द्वारा परमेश्वर को महिमा प्रदान करना है, फिर भी हमें बाइबल के इतिहास की रूपरेखा के दूसरे आयाम को देखने की भी आवश्यकता है : परमेश्वर के कार्य और वचन प्रकाशन का उठना और गिरना।

कार्य और वचन प्रकाशन का उठना और गिरना

आप शायद समुद्रतट पर गए हों और आपने जलप्रवाह को तट पर आते हुए देखा होगा। इस बात पर ध्यान देना कठिन नहीं है कि जब समुद्री प्रवाह आगे बढ़ता है, तो यह आराम से आगे नहीं बढ़ता है। प्रगति तो होती है, परंतु प्रवाह तब आगे की ओर बढ़ता है जब लहरें उठती और गिरती हैं।

इसी तरह से, सुसमाचारिक बाइबल आधारित धर्मविज्ञान ने बल दिया है कि परमेश्वर ने इतिहास को कार्य और वचन प्रकाशन की लहरों में अपने महिमामय राज्य की ओर आगे बढ़ाया है। यद्यपि परमेश्वर अपने विधान में हर समय इस संसार को नियंत्रित रखता है, परंतु फिर भी इतिहास में ऐसे समय होते हैं जब वह अन्य समयों की अपेक्षा अधिक नाटकीय तरीके से कार्य करता और बोलता है। और फलस्वरूप, बाइबल के इतिहास में प्रकाशन उठता और गिरता रहता है, तब भी जब यह अपने अंतिम गंतव्य की ओर आगे की बढ़ रहा है।

इसी कारणवश, दो तरीकों से परमेश्वर के कार्य और वचन प्रकाशन के आधार पर सोचना सहायक होता है : ऐसे समय जिन्हें ईश्वरीय प्रकाशन के निम्न बिंदुओं के रूप में चित्रित किया जा सकता है; और ऐसे समय जिन्हें प्रकाशन के उच्च बिंदुओं के रूप में चित्रित किया जा सकता है। एक ओर, पूरी बाइबल में कम ईश्वरीय कार्य और वचन प्रकाशन के समय हैं, या जिन्हें हम इतिहास के निम्न बिंदु कह सकते हैं। उदाहरण के लिए, सुनिए किस प्रकार शमूएल की पुस्तक के लेखक ने 1 शमूएल 3:1 में शमूएल के जीवन के आरंभिक दिनों का वर्णन किया है :

> वह बालक शमूएल एली के सामने यहोवा की सेवा टहल करता था। उन दिनों में यहोवा का वचन दुर्लभ था; और दर्शन कम मिलता था। (1 शमूएल 3:1)

शमूएल के बचपन के समय में प्रकाशन की कमी थी। अपने लोगों के पापों के कारण परमेश्वर एक निश्चित अवधि के लिए उनसे दूर हो गया और उनके लिए अपेक्षाकृत बहुत ही कम कार्य किया और उनसे बहुत ही कम बातचीत की।

शायद बाइबल के इतिहास में निम्न बिन्दु का सबसे नाटकीय उदाहरण नए और पुराने नियम के बीच, अर्थात् मलाकी और यूहन्ना बपतिम्मा देने वाले के बीच का समय है, जब इस्राएल राष्ट्र विदेशी शक्तियों के अधीन था। इस दोनों नियमों के बीच की अवधि में इस्राएल परमेश्वर के कड़े श्राप के अधीन था और उसने अपने लोगों के लिए नाटकीय तरीके से कार्य नहीं किया; न ही उसने उनसे कुछ अधिक कहा।

दूसरी ओर, उठते जलप्रवाह की तेज लहरों के समान बाइबल के इतिहास में उच्च बिन्दु भी थे जब परमेश्वर के कार्य और वचन प्रकाशन नाटकीय तरीके से आगे बढ़े। ऐसे समयों में, परमेश्वर ने प्रभावशाली कार्य किए और अपने लोगों पर इतना कुछ प्रकट किया कि वह वास्तव में अपने राज्य को विकास के नए चरणों में लेकर आया। उदाहरण के लिए, यद्यपि शमूएल के आरंभिक वर्षों में प्रकाशन की बहुत कमी थी, परंतु जैसे जैसे शमूएल बड़ा होता गया, परमेश्वर नाटकीय तरीके से कार्य करने लगा और एक बार फिर से अपने लोगों पर अपनी इच्छा प्रकट करने लगा। शमूएल की सेवकाई के द्वारा परमेश्वर ने अपने कार्य और वचन प्रकाशन में वृद्धि की जिससे इतिहास इस्राएल के राजवंश की अवधि, अर्थात् दाऊद के राजवंश के दिनों की ओर बढ़ा।

लगभग इसी तरह से, पुराने और नए नियम के बीच के निम्न बिंदु के बाद संसार के इतिहास में परमेश्वर का महानतम प्रकाशन आया : यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला और मसीह का पहला आगमन, और भव्य वचन प्रकाशन जो मसीह और उसके प्रेरितों ने हमें दिया। परमेश्वर के ये सामर्थी कार्य बाइबल के इतिहास को एक ऐसे चरण में लेकर आए जिसे हम अब नए नियम की अवधि कहते हैं।

इतिहास में ईश्वरीय कार्यों और वचनों की वृद्धि बाइबल आधारित धर्मविज्ञान में विशेष रूप से महत्वपूर्ण है क्योंकि ये ऐसे समय थे जब परमेश्वर अपने राज्य को नए चरणों या युगों में लेकर आया। जलप्रलय, अब्राहम की बुलाहट, मिस्र में से इस्राएल का छुटकारा, राजतंत्र की स्थापना, इस्राएल और यहूदा की बंधुआई, बंधुआई से लौटकर पुनर्स्थापना, मसीह की पृथ्वी पर की सेवकाई, पवित्र आत्मा का उंडेला जाना जैसी घटनाएँ ऐसे समयों को चिह्नित करती हैं जब पृथ्वी पर परमेश्वर के राज्य को विकास के नए चरणों में लाया गया। अतः, इसी कारणवश, सुसमाचारिक बाइबल आधारित धर्मविज्ञान में बाइबल के इतिहास को विभिन्न युगों या अवधियों में विभाजित करना सामान्य बात है।

यह जान लेना कि परमेश्वर के प्रकाशन का उठना और गिरना बाइबल के इतिहास को युगों या अवधियों में विभाजित कर देता है, एक बहुत ही गंभीर प्रश्न को उठाता है : इतिहास के ये विभिन्न चरण एक दूसरे के साथ कैसे संबंधित हैं? सारांश में, बाइबल आधारित धर्मविज्ञान ने पवित्रशास्त्र में इतिहास की संगठित प्रकृति पर बल दिया है।

संगठित विकासक्रम

समकालीन सुसमाचारिक मसीहियत से परिचित प्रत्येक व्यक्ति जानता है कि आज बहुत से मसीही यह मानते हैं कि बाइबल के इतिहास के युग या उसकी अवधियाँ आधारभूत रूप से असंबद्ध हैं। इस दृष्टिकोण में, पवित्रशास्त्र में समय की अवधियों का एक दूसरे के साथ बहुत ही कम संबंध है, विशेषकर पुराने नियम और नए नियम की अवधियों का। अब, चाहे यह दृष्टिकोण आज जितना भी लोकप्रिय हो, बाइबल आधारित धर्मविज्ञान ने यह दर्शाया है कि बाइबल के इतिहास के विकासक्रम संगठित रूप से एकीकृत थे।

शब्द “संगठित” यह दर्शाने के लिए एक रूपक के रूप में कार्य करता है कि बाइबल का इतिहास एक बढ़ती हुई रचना के समान है जिसकी वृद्धि को पूरी तरह से विभाजित नहीं किया जा सकता या इसे कई भिन्न टुकड़ों में तोड़ा नहीं जा सकता। इस दृष्टिकोण में, बाइबल के विश्वास की तुलना अक्सर ऐसे बीज से की जाती है जिसे बाइबल के इतिहास के आरंभिक चरणों में रोपा गया था, तब यह धीमी गति से पुराने नियम से विकसित होता हुआ, अंततः नए नियम में परिपक्वता तक पहुँच गया। एक अवधि से दूसरी अवधि के बीच हुए परिवर्तनों को विकास या परिपक्वता के रूप में देखा जाता है। ये विकास असमान रूप से होते हैं, जब कार्य और वचन प्रकाशन के बहाव इतिहास को नए युगों की ओर बढ़ाते हैं, लगभग वैसे ही जैसे पौधे और जानवर दूसरे समयों की अपेक्षा कुछ समयों में अधिक विकास करते हैं। परंतु बाइबल के इतिहास की अवधियाँ ऐसे अलग-अलग या पृथक हिस्से नहीं हैं जिनका एक दूसरे के साथ कोई संबंध न हो। इसकी अपेक्षा, प्रकाशन के एक के बाद एक लगातार चरण प्रकाशन के पहले के चरणों के विकास हैं।

इसी कारणवश, बाइबल आधारित धर्मविज्ञानी बाइबल के आरंभिक चरणों में नए नियम के प्रकाशन के बीज को देखने के लिए और फिर यह पता लगाने के लिए बहुत ही कठिन परिश्रम करते हैं कि ये बीज कैसे बढ़े जब आगे का कार्य और वचन प्रकाशन परमेश्वर के राज्य में विकास के एक के बाद एक लगातार चरणों को लेकर आया, और नए नियम की ओर अगुवाई की।

हमारे कहने का जो अर्थ है उसे समझाने के लिए मसीह के विषय में नए नियम की कई मुख्य शिक्षाओं के सरल उदाहरण को लें। हम मसीह की सेवकाई में घटनाओं के तीन समूहों से संबंधित परमेश्वर के “वचन प्रकाशन” पर ध्यान देंगे। अन्य बातों के बीच, हम नए नियम से यह सीखते हैं कि त्रिएकता का दूसरा व्यक्तित्व देहधारी हुआ और उसने एकमात्र सिद्ध धर्मी प्राणी के रूप में जीवन जीया। नया नियम सिखाता है कि यीशु की मृत्यु, पुनरूत्थान और स्वर्गारोहण ने अपने लोगों के लिए उनके पापों का मूल्य अदा करने के द्वारा छुटकारे को प्रदान किया, और इस प्रकार उन्हें नया जीवन प्रदान किया तथा उन्हें पवित्र आत्मा का वरदान प्रदान किया। और हम यह भी सीखते हैं कि जब यीशु का पुनरागमन होगा तो

वह अपने शत्रुओं को पूरी तरह से पराजित करते हुए और नई सृष्टि में अपने लोगों को महिमामय विजय प्रदान करते हुए जयवंत रूप से राज्य करेगा। परमेश्वर के ये कार्य और वचन मसीही सुसमाचार की मुख्य विशेषताएँ हैं।

यीशु के विषय में जैसे इन बातों को जानना और इनमें विश्वास करना अद्भुत है, वैसे ही परमेश्वर ने जो मसीह में किया है उसके विषय में हमारी समझ तब बहुत बढ़ सकती है जब हम यह महसूस करते हैं कि नए नियम के ये विषय वास्तव में पूरे पवित्रशास्त्र में संगठित रूप से बढ़े हैं। यह देखने के लिए कि यह कैसे सत्य है, हम पुराने नियम के प्रकाशन के ऐसे कुछ तरीकों को संक्षेप में दर्शाएँगे जो उनमें परिपक्व या विकसित हो गए हैं जिसे परमेश्वर ने मसीह में पूरा किया है।

परमेश्वर ने जो मसीह में पूरा किया वह वास्तव में उत्पत्ति के आरंभिक अध्यायों में एक छोटे से बीज के रूप में आरंभ हुआ था। सबसे पहले, उत्पत्ति 1 के बिलकुल आरंभ में ही, परमेश्वर ने अपने संसार में मनुष्यजाति को अपने स्वरूप के रूप में एक विशेष भूमिका प्रदान की। उसके स्वरूप के रूप में, हमें धर्मी पात्र होने के लिए बुलाया गया जिसके द्वारा परमेश्वर का स्वर्ग या राज्य पूरे संसार में फैल जाए। यह एक कारण है कि क्यों नया नियम मसीह के देहधारण और धर्मी जीवन पर बल देता है। वह अंतिम आदम है, अर्थात् वह जिसने उस भूमिका को सिद्ध रूप में पूरा किया जो मूल रूप से मनुष्यजाति को दी गई थी।

दूसरा, उत्पत्ति अध्याय 2 में मनुष्यजाति का पाप में पतन हमें सिखाता है कि पाप ने मनुष्यों और शेष सृष्टि को परमेश्वर के दंड से छुटकारे की आवश्यकता में डाल दिया है। यह आवश्यकता ही मसीह की मृत्यु, पुनरूत्थान और स्वर्गारोहण के विषय में नए नियम की शिक्षा का बीज था। वह उन लोगों को पाप के श्राप से छुड़ाने के लिए मरा और जी उठा जिन्होंने उस पर विश्वास किया। मसीह के सिद्ध प्रायश्चित, सामर्थी पुनरूत्थान और प्रबल स्वर्गारोहण के द्वारा हम परमेश्वर के स्वरूप और शेष सृष्टि के छुटकारे को देखते हैं।

तीसरा, पाप में पतन के तुरंत बाद परमेश्वर ने यह संकेत दिया कि एक दिन मनुष्यजाति के बचे हुए धर्मी लोग बुराई पर विजय प्राप्त करेंगे। उत्पत्ति 3:15 में हम इन शब्दों को पढ़ते हैं जिन्हें परमेश्वर ने सर्प से कहे थे :

> और मैं तेरे और इस स्त्री के बीच में, और तेरे वंश और इसके वंश के बीच में बैर उत्पन्न करूँगा; वह तेरे सिर को कुचल डालेगा, और तू उसकी एड़ी को डसेगा। (उत्पत्ति 3:15)

यहाँ परमेश्वर ने घोषणा की कि मनुष्यजाति सर्प या शैतान की संतान, और हव्वा की संतान में विभाजित होंगी, अर्थात् वे जिन्होंने सर्प के धोखे का अनुसरण करना जारी रखा और वे जिन्होंने मनुष्यजाति को मूल रूप से दिए गए कार्य को लिया। जैसा कि यह वचन दर्शाता है, मनुष्यजाति के ये दो विभाजन एक दूसरे के विरोध में होंगे, परंतु परमेश्वर ने प्रतिज्ञा की कि अंततः स्त्री की संतान सर्प के सिर को कुचल देगी, और उस पर तथा उसकी संतान पर विजय की घोषणा करेगी। और इसी कारण रोमियों 16:20 में प्रेरित पौलुस ने यीशु के महिमा में पुनरागमन के बारे में इस तरह से कहा है :

> शान्ति का परमेश्वर शैतान को तुम्हारे पाँवों से शीघ्र कुचलवा देगा। (रोमियों 16:20)

यीशु के जयवंत पुनरागमन का अनुमान उत्पत्ति के आरंभिक अध्यायों में ही लगा लिया गया था। अतः हम देखते हैं कि देहधारण और जीवन; मृत्यु; पुनरूत्थान; और स्वर्गारोहण; और मसीह के पुनरागमन के विषय में नए नियम की शिक्षा कोई नए विचार नहीं है। बाइबल के इतिहास के आरंभिक समय में ही उन्हें बीजों के रूप में रोपित कर दिया गया था।

यह देखने के अतिरिक्त कि नए नियम की शिक्षाएँ किस प्रकार उत्पत्ति के आरंभिक अध्यायों तक पहुँचती हैं, हमें यह जानकारी भी होनी चाहिए कि उत्पत्ति के आरंभिक अध्यायों और नए नियम के बीच विकास के बहुत से चरण हैं। परंतु इस अध्याय में हमारे उद्देश्यों के लिए हम पुराने नियम के इतिहास के केवल एक चरण को देखेंगे, अर्थात् ऐसे समयों को जब परमेश्वर ने इस्राएल राष्ट्र के साथ सकारात्मक रूप से व्यवहार किया।

सबसे पहले, हम पहले ही देख चुके हैं मसीह के देहधारण और धर्मी जीवन ने उस भूमिका को पूरा किया जो उत्पति में मूल रूप से मनुष्यजाति को दी गई थी। परंतु अब्राहम के समय से लेकर पुराने नियम के अंत तक, यह उद्देश्य एक विशेष दिशा में बढ़ा। सामान्य भाव में, परमेश्वर ने पुराने नियम के इस्राएल को स्त्री का विश्वासयोग्य वंश बनने, पृथ्वी के अंतिम छोर तक परमेश्वर के राज्य को फैलाने की बुलाहट दी। और एक विशेष तरीके में, इस्राएल में राजतंत्र के उदय के साथ परमेश्वर ने ठहराया कि दाऊद का एक धर्मी पुत्र विश्वासयोग्य इस्राएलियों की उनके राज्य से संबंधित गंतव्य की ओर अगुआई करेगा।

इसीलिए हम पाते हैं कि नया नियम केवल यही नहीं कहता है कि यीश एक धर्मी व्यक्ति था। उन तरीकों के प्रकाश में जिनमें मनुष्यजाति की भूमिका का विकास इस्राएल के साथ परमेश्वर के पुराने नियम के व्यवहारों से हुआ, यीशु एक धर्मी इस्राएली के रूप में उत्पन्न हुआ। और इससे बढ़कर, यीशु इस्राएल का धर्मी राजा, दाऊद के सिंहासन का न्यायसंगत उत्तराधिकारी था। मसीह के देहधारण और जीवन का नए नियम का चित्रण न केवल आदम को दिए गए मूल आदेश को पूरा करता है, बल्कि पुराने नियम के उस आदेश के आगे के विकास को भी पूरा करता है, जैसे कि यह इस्राएल के लोगों और उनके राजा से संबंधित है।

दूसरा, हम देख चुके हैं कि यीशु उस छुटकारे की आवश्यकता को पूरा करता है जो आदम और हव्वा के पाप में पतन के कारण उत्पन्न हुई थी। परंतु जब हम इस पर ध्यान देते हैं कि छुटकारे का यह विषय पुराने नियम में कैसे विकसित हुआ, तो हम मसीह के कार्य को और पूर्ण रूप से समझ सकते हैं। जैसा कि हम जानते हैं, परमेश्वर ने संसार में पाप की वास्तविकता के निपटारे के लिए पशु बलियों और आराधना की पद्धति को पहले मिलाप के तंबू में और बाद में यरूशलेम के मंदिर में ठहराया। ये धार्मिक कार्य विस्तृत याजकीय व्यवस्था के द्वारा ही संचालित किए जाते थे। परंतु ये प्रावधान चाहे कितने भी अद्भुत थे, फिर भी ये पाप के प्रभावों से केवल अस्थाई राहत ही प्रदान कर सके। उन्होंने किसी को परमेश्वर के दंड के श्राप से स्थाई छुटकारा प्रदान नहीं किया।

पुराने नियम के इतिहास के भीतर यह विकासक्रम स्पष्ट करता है कि नया नियम उस छुटकारे के बारे में कुछ बातों पर बल क्यों देता है जो मसीह की मृत्यु, पुनरूत्थान और स्वर्गारोहण के द्वारा आया। जब क्रूस पर यीशु मरा, तो उसने पुराने नियम की सब पशु बलियों की पूर्णता में अपने लोगों के लिए सिद्ध बलिदान के रूप में ऐसा किया। अपने पुनरूत्थान के द्वारा वह पूर्ण और अंतिम बलिदान प्रमाणित हुआ। और आज भी, स्वर्गारोहित प्रभु के रूप में वह हमारे महान महायाजक के रूप में अपने लोगों के लिए मध्यस्थता करता है। और इस भूमिका में वह लगातार अपने बलिदान की श्रेष्ठता के आधार पर आग्रह करता है जब वह परमेश्वर के स्वर्गीय मंदिर में सेवाकार्य करता है। इसलिए, यद्यपि मसीह के छुटकारे का कार्य उत्पत्ति के आरंभिक अध्यायों में पाप में हुए पतन तक पहुँचता है, फिर भी यह इस्राएल के मिलाप वाले तंबू और मंदिर की आराधना के मध्यवर्ती चरणों से होता हुआ भी विकसित हुआ है।

तीसरा, मसीह के पुनरागमन के समय अंतिम महिमामय विजय के बारे में नए नियम की शिक्षा भी परमेश्वर के इस्राएल के साथ व्यवहारों से ही विकसित हुई है। जब परमेश्वर ने इस्राएल को अपने विशेष धर्मी लोग होने के लिए बुलाया, तो उसने उन्हें स्त्री के वंश के रूप में विजयी जीवन व्यतीत करने के लिए बुलाया। अन्यजाति राष्ट्र जिन्होंने शैतान के मार्गों का अनुसरण किया, उन्होंने पूरे पुराने नियम में हर तरफ से इस्राएल का विरोध किया और उसे परेशान किया, परंतु परमेश्वर ने पुराने नियम के इस्राएल को परम विजय देने की प्रतिज्ञा दी यदि वह विश्वासयोग्यता के साथ परमेश्वर के राज्य का विस्तार करता है। इसी

कारणवश, यह हमारे लिए कोई आश्चर्य की बात नहीं होनी चाहिए कि नया नियम नए आकश और नई पृथ्वी में मसीह की अंतिम विजय का वर्णन नए यरूशलेम के आगमन के रूप में करता है। जब सुसमाचार की घोषणा की जाती है और यहूदी और अन्यजातियाँ दोनों स्वयं को यीशु, जो मसीह है, के प्रति समर्पित कर देते हैं तो वह अपनी कलीसिया को एक देह में बनाता है और महिमामय विजय की प्रतिज्ञात, अंतिम, और अनंत अवस्था की ओर उनकी अगुवाई करता है।

इस उदाहरण से हम देख सकते हैं कि कैसे बाइबल आधारित धर्मविज्ञान पवित्रशास्त्र के इतिहास को बढ़ते हुए परंतु साथ ही एकीकृत संगठित इतिहास के रूप में देखता है। इतिहास का प्रत्येक चरण प्रकाशन के पिछले चरणों पर विकसित होता है और मसीह में परमेश्वर के राज्य की परम पूर्णता का पूर्वानुमान लगाता है। जब हम इस श्रृंखला को आगे बढ़ाते हैं, तो हम देखेंगे कि ईश्वरीय कार्य और वचन प्रकाशन का यह संगठित दृष्टिकोण बाइबल आधारित धर्मविज्ञान में बार-बार दर्शाया जाता है।

उपसंहार

इस अध्याय में हमने बाइबल आधारित धर्मविज्ञान पर अपनी पहली नजर डाली है। हमने इस अध्ययन क्षेत्र में मूल दिशा निर्देश को प्राप्त किया है, और इस बात पर ध्यान दिया है कि यह परमेश्वर के कार्यो के ऐतिहासिक विश्लेषण के साथ पवित्रशास्त्र तक कैसे पहुँचता है। हमने यह भी देखा है कि बाइबल आधारित धर्मविज्ञान का औपचारिक शिक्षण-संकाय सदियों के गुजरने के साथ-साथ कैसे विकसित हुआ है। और अंततः, हमने इतिहास और प्रकाशन पर इसके मुख्य केंद्र की खोज की है।

बाइबल आधारित धर्मविज्ञान उस एक प्रभावशाली तरीके को प्रस्तुत करता है जिस पर सुसमाचारिक लोगों ने हाल ही की सदियों में अपने धर्मविज्ञान का निर्माण किया है। जब हम पवित्रशास्त्र के इस दृष्टिकोण का अध्ययन जारी रखते हैं, तो हम पाएँगे कि यह धर्मविज्ञान के अधिक पारंपरिक दृष्टिकोणों को पूरा करता है, और साथ ही कई ऐसी अंतर्दृष्टियों की ओर ध्यान को आकर्षित करता है जिन्हें अतीत में बार-बार अनदेखा कर दिया गया था। अच्छी तरह से निर्मित बाइबल आधारित धर्मविज्ञान और अधिक व्यापक रूप से परमेश्वर के वचन की खोज करने में और ऐसे धर्मविज्ञान की रचना करने में हमारी सहायता करेगा जो पवित्रशास्त्र के प्रति सच्चा और कलीसिया की उन्नति करने वाला हो।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।